नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 387, नई दिल्ली, शुक्रवार 27 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

श्री राम नवमी की हार्दिक शुभकामनायें

03 दिल्ली में प्राइवेट बसें कर रही ट्रैफिक नियमों का जमकर उल्लंघन, हर दिन कट रहे 80 चालान
06 खेल व खिलाड़ियों में भाव परिवर्तन
08 रांची में रेल वाणिज्यिक निरीक्षण हिमांशु को पचास हजार घुस लेते सीबीआई ने किया गिरफ्तार

देशभर के विशेषज्ञ एक मंच पर — "परिवहन विशेष कॉन्क्लेव 2026" बनेगा विचारों का महासंगम

जलवायु, ट्रैफिक, साइबर क्राइम और महिला सुरक्षा पर होगा मंथन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली | देश के प्रतिष्ठित परिवहन एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े मंच परिवहन विशेष द्वारा आयोजित 3rd Parivahan Vishesh Conclave & Excellence Award Ceremony 2026 का भव्य एवं गरिमामय आयोजन आगामी 29 मार्च 2026 (रविवार) को दोपहर 1:00 बजे से नई दिल्ली स्थित मावलांकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशनल क्लब में संपन्न होगा। यह आयोजन देशभर के विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं, समाजसेवियों एवं प्रबुद्ध नागरिकों का एक महत्वपूर्ण संगम सिद्ध होगा।
कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री जस्टिस राजेश टंडन (पूर्व न्यायाधीश, उत्तराखंड उच्च न्यायालय) अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। वे अपने संबोधन में न्यायिक दृष्टिकोण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा परिवहन व्यवस्था से जुड़े समसामयिक विषयों पर अपने विचार साझा करेंगे, जो उपस्थित जनसमूह के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होंगे।
इस अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों—जैसे चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन, सुरक्षा, सामाजिक सेवा एवं आध्यात्मिक क्षेत्र—से जुड़े प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को Guest of Honour के रूप में आमंत्रित किया जाएगा। इन विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक ऊँचाइयों तक पहुंचाएगी।
यह कॉन्क्लेव समकालीन चुनौतियों एवं सामाजिक सरोकारों पर केंद्रित रहेगा। विशेष रूप से

- **जलवायु परिवर्तन एवं प्रदूषण**
- **सड़क दुर्घटनाएं एवं ट्रैफिक जाम**
- **साइबर क्राइम**
- **महिला सुरक्षा**

जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा गहन विचार-विमर्श किया जाएगा। विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी वक्ता अपने अनुभव, सुझाव एवं शोध आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए इन समस्याओं के समाधान हेतु ठोस एवं व्यावहारिक उपायों पर प्रकाश डालेंगे।
कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण Excellence Award Ceremony होगा, जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों, संस्थानों एवं संगठनों को सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन लोगों के प्रयासों को पहचान देने का एक सार्थक प्रयास होगा, जिन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
कार्यक्रम स्थल को विशेष रूप से आकर्षक एवं भव्य रूप से सजाया जाएगा। पुष्प सज्जा, सुसज्जित मंच, आधुनिक प्रकाश व्यवस्था एवं सुव्यवस्थित बैठने की व्यवस्था कार्यक्रम को एक गरिमामय वातावरण प्रदान करेगी। बड़ी संख्या में उपस्थित दर्शक, गणमान्य अतिथि एवं मीडिया प्रतिनिधि इस आयोजन के साक्षी बनेंगे।
आयोजकों के अनुसार, यह कॉन्क्लेव केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान, जागरूकता बढ़ाने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह मंच विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक साथ लाकर संवाद, सहयोग और समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगा।
कार्यक्रम के अंत में आयोजक सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करेंगे तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के प्रभावशाली आयोजनों के माध्यम से समाज एवं राष्ट्रहित में योगदान देने का संकल्प दोहराया जाएगा।

मिलेगा हर कार्य में सिद्धि का वरदान ! महानवमी पर इन शुभकामनाओं के साथ शुरू करें खुशियों का नया अध्याय

नवरात्रि का पावन उत्सव अपने चरमोत्कर्ष पर है। आठ दिनों की अखंड साधना और भक्ति के बाद, अब वक्त है महानवमी का, जो पूर्णता और सिद्धियों का प्रतीक है। महानवमी 2026, न केवल मां सिद्धिदात्री की पूजा का दिन है, बल्कि यह हमारे जीवन में सफलता और संतोष के नए...

नवरात्रि का पावन उत्सव अपने चरमोत्कर्ष पर है। आठ दिनों की अखंड साधना और भक्ति के बाद, अब वक्त है महानवमी का, जो पूर्णता और सिद्धियों का प्रतीक है। महानवमी 2026, न केवल मां सिद्धिदात्री की पूजा का दिन है, बल्कि यह हमारे जीवन में सफलता और संतोष के नए अध्याय की शुरुआत का भी सूचक है। कहा जाता है कि जो भक्त सच्चे मन से मां सिद्धिदात्री की शरण में जाता है, उसके सारे अटके कार्य पूरे हो जाते हैं और उसे हर क्षेत्र में सिद्धि का वरदान मिलता है। तो आइए जानते हैं महानवमी के महत्व और कुछ ऐसे मौलिक, काव्यात्मक संदेशों के बारे में जिन्हें भेजकर आप अपने प्रियजनों के जीवन में खुशियों का संचार कर सकते हैं।

महानवमी का पावन संदेश

"सिद्धिदात्री मां का आशीर्वाद लाएगा रंग,
हर काम में मिलेगी सफलता, खुशियों के संग।
मिट जाएगा हर अंधेरा, नया सवेरा आएगा,
इस नवमी मां का नाम, हर दिल को लुभाएगा।"

"चरणों में शीश झुकाएं, जयकारे लगाएं,
ममता की मूरत मां, हर दुःख मिटाएं।
अष्ट सिद्धियां, नवनिधियां मिलें आपको,
सुख और शांति का, वरदान दिलवाएं।"
"कंजिका पूजन की खुशबू, घर में समाए,
मां का दुलार मिले, हर बाधा हट जाए।
इस नवमी करें शुरुआत, खुशियों के नए दौर की,
मां की कृपा बरसेगी, हर ओर हर दौर की।ꝛ

ꝛशब्दों में मां की महिमा, कैसे बयां करें,
हर सिद्धि की दाता मां, क्यों न उन्हें नमन करें।
आज का दिन है खास, कुछ नया करने का,
मां का नाम लेकर, सफलता की ओर बढ़ने का।ꝛ

ꝛनवरात्रि का नौवां दिन, सुख-समृद्धि का है
मेल,
मां सिद्धिदात्री की कृपा से, मिट जाएगा हर खेल।
भेजें ये काव्यात्मक विशेज, अपनों को दिल से,
मां का आशीर्वाद मिले, हर क्षेत्र हर मंजिल से।ꝛ

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ

इस राम नवमी घर जरूर लाएं ये 5 शुभ वस्तुएं, खुलेंगे तरक्की के रास्ते

राम नवमी का पावन पर्व इस वर्ष 27 मार्च 2026 को मनाया जाएगा। यह दिन भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में पूरे देश में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन पूजा-अर्चना के साथ कुछ विशेष वस्तुओं को घर लाना बेहद शुभ माना जाता है। ऐसा करने से न केवल वास्तु दोष दूर होते हैं, बल्कि घर में सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी होता है। आइए जानते हैं राम नवमी के दिन किन 5 चीजों को घर लाना आपके लिए लाभकारी हो सकता है।

तुलसी का पौधा लाएं घर

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु को तुलसी अत्यंत प्रिय है और भगवान श्रीराम को उनका अवतार माना जाता है। ऐसे में राम नवमी के दिन घर में तुलसी का पौधा लाना बेहद शुभ माना जाता है। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है और वास्तु दोष दूर होते हैं। साथ ही परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।

शंख घर में लाना शुभ

राम नवमी के दिन शंख घर लाना और पूजा के समय शंखनाद करना अत्यंत फलदायी माना जाता है। शंखनाद से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है और घर में पवित्रता का वातावरण बनता है। मान्यता है कि इससे माता लक्ष्मी का भी आगमन होता है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

राम दरबार की तस्वीर या मूर्ति

राम नवमी के अवसर पर भगवान राम, माता सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की संयुक्त तस्वीर या प्रतिमा यानी राम दरबार घर लाना बेहद शुभ माना जाता है। इससे परिवार में प्रेम, एकता और सामंजस्य बढ़ता है। घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है।

श्रीराम यंत्र की स्थापना

राम नवमी के दिन श्रीराम यंत्र घर में स्थापित करना भी विशेष लाभकारी माना गया है। यह यंत्र घर को बुरी नजर और नकारात्मक शक्तियों से बचाता है। परिवार के सदस्यों के बीच तालमेल और शांति बनाए रखने में मदद करता है। जीवन की कठिनाइयों को दूर करने में सहायक माना जाता है।

चांदी का सिक्का

राम नवमी के दिन चांदी का सिक्का खरीदकर उसे पूजा में अर्पित करना बेहद शुभ माना जाता है। इससे भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त होता है। कुंडली में मौजूद चंद्र दोष को दूर करने में मदद मिलती है। आर्थिक समृद्धि और स्थिरता आती है।

धार्मिक महत्व और निष्कर्ष

राम नवमी का पर्व केवल भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दिन धर्म, मर्यादा और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक भी है। इस दिन सही विधि से पूजा करने और शुभ वस्तुओं को घर लाने से वास्तु दोष दूर होते हैं। घर में सुख-समृद्धि आती है। पारिवारिक जीवन में खुशहाली बढ़ती है इसलिए इस राम नवमी पर इन 5 चीजों को घर लाकर अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

राम नवमी पर सूर्य की किरणों से होगा रामलला का तिलक.....

राम नवमी के अवसर पर 27 मार्च को अयोध्या के लगभग 5 हजार मंदिरों में भव्य उत्सव मनाया जाएगा। इस बार का सबसे बड़ा आकर्षण श्री राम जन्मभूमि मंदिर में होने वाला सूर्य तिलक कार्यक्रम होगा, जिसमें दोपहर ठीक 12 बजे सूर्य की किरणें भगवान...

राम नवमी के अवसर पर 27 मार्च को अयोध्या के लगभग 5 हजार मंदिरों में भव्य उत्सव मनाया जाएगा। इस बार का सबसे बड़ा आकर्षण श्री राम जन्मभूमि मंदिर में होने वाला सूर्य तिलक कार्यक्रम होगा, जिसमें दोपहर ठीक 12 बजे सूर्य की किरणें भगवान रामलला के मस्तक को स्पर्श करेंगी। इस अद्भुत दृश्य को देश-विदेश के लोग लाइव देख सकेंगे, जिसके लिए विशेष तकनीकी तैयारियां की जा रही हैं।

राम जन्मोत्सव की शुरुआत सुबह से ही धार्मिक अनुष्ठानों के साथ हो जाएगी। भगवान रामलला का अभिषेक दूध, दही, शहद और सरयू नदी के पवित्र जल से किया जाएगा। इसके बाद उन्हें सुंदर वस्त्र और कीमती आभूषण पहनाए जाएंगे। पूरे मंदिर परिसर में वैदिक मंत्रों की गूंज और भक्ति का वातावरण बना रहेगा।

इस खास दिन पर मंदिर के कपाट सुबह 6:30 बजे से ही श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे और पूरे दिन दर्शन जारी रहेंगे। मंदिर प्रशासन के अनुसार, सुबह के अनुष्ठान 11 बजे तक संपन्न होंगे लेकिन भक्तों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मंदिर बंद नहीं किया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोग दर्शन कर सकें।

दोपहर 12 बजे भगवान राम के जन्म का उत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इसी समय सूर्य तिलक का दिव्य नजारा देखने को मिलेगा, जिसे एलईडी स्क्रीन के माध्यम से लाइव प्रसारित किया जाएगा।

भगवान रामलला को इस दिन विशेष रूप से 56 प्रकार के भोग अर्पित किए जाएंगे, साथ ही करीब 6 क्विंटल पंजीरी भी चढ़ाई जाएगी। मंदिर परिसर में दिनभर बधाई गीत और भजन-कीर्तन चलते रहेंगे। राम दरबार में भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिससे पूरे माहौल में भक्ति की अनुभूति होगी।

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए दर्शन मार्ग पर छाया, मैट और अन्य व्यवस्थाएं की जाएंगी। फूलों से सजे फूल बंगला की झांकी भी लोगों को आकर्षित करेगी। शाम के समय मंदिर का शिखर आकर्षक रोशनी से जगमगा उठेगा, जिससे पूरा परिसर दिव्यता और आस्था से भर जाएगा।

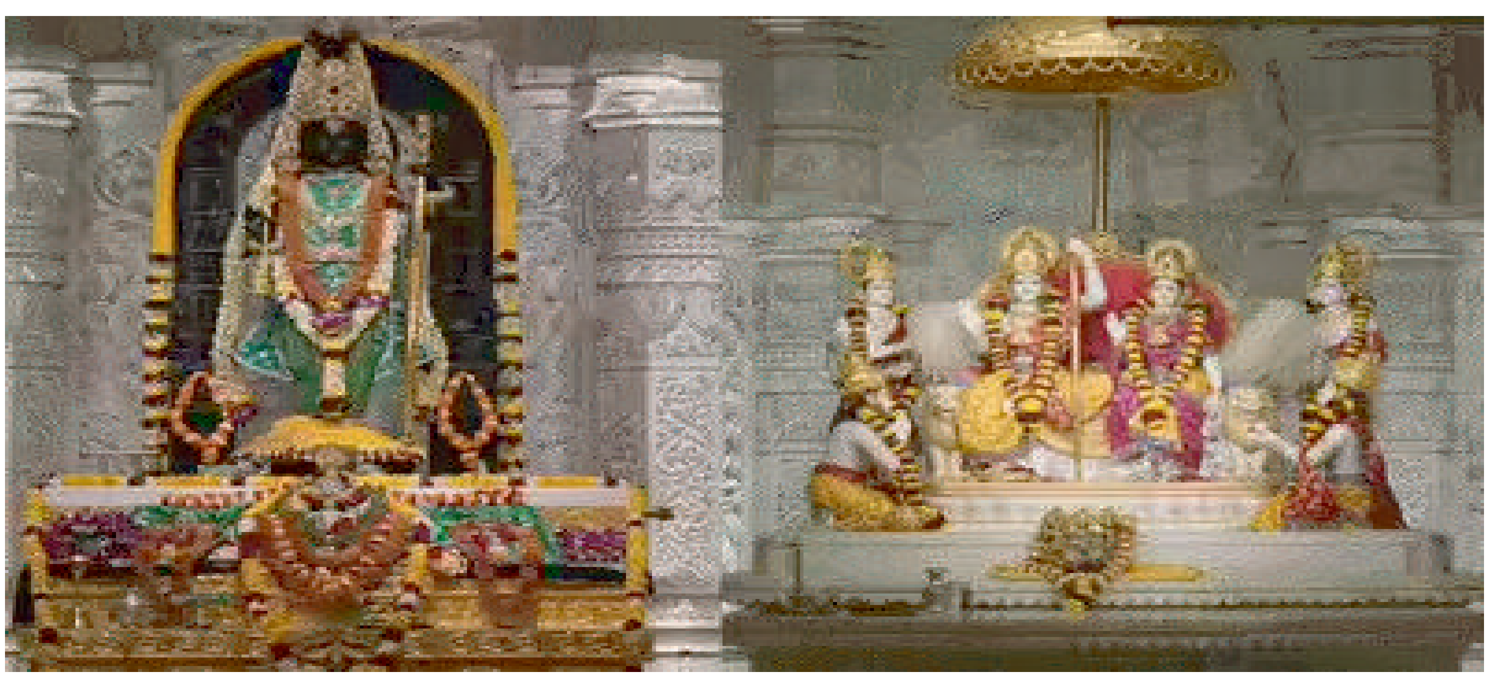

चैत्र नवरात्रि के नौवें दिन इस विधि से करें मां सिद्धिदात्री की पूजा और पढ़ें कथा

चैत्र नवरात्रि के नौवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा का विधान है। इनके नाम से ही स्पष्ट होता है कि यह सभी प्रकार की सिद्धियां प्रदान करने वाली देवी हैं। मां सिद्धिदात्री देवी सरस्वती की ही स्वरूप हैं।

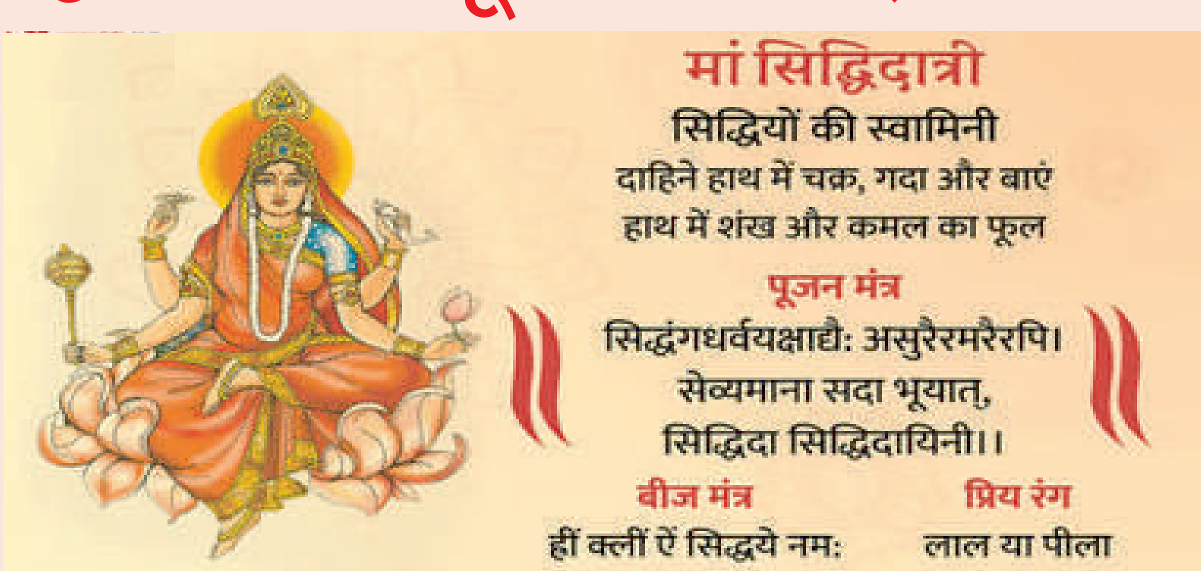

चैत्र नवरात्रि के नौवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा का विधान है। इनके नाम से ही स्पष्ट होता है कि यह सभी प्रकार की सिद्धियां प्रदान करने वाली देवी हैं। मां सिद्धिदात्री देवी सरस्वती की ही स्वरूप हैं। वैसे तो इनका वाहन सिंह है लेकिन यह माता लक्ष्मी की तरह कमल के आसन पर विराजमान होती हैं। माता के चार हाथ हैं और इनके दाहिने और नीचे वाले हाथ में चक्र ऊपर वाले हाथ में गदा और बाईं ओर नीचे के हाथ में कमल का फूल और ऊपर वाले हाथ में शंख हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार मां भगवती के इस स्वरूप की पूजा करने से व्यक्ति को अष्टसिद्धियों की प्राप्ति होती है। साथ ही भय और रोगों से मुक्ति मिलती है।

सिद्धिदात्री की महिमा

नवदुर्गा का नौवां और अंतिम स्वरूप है मां सिद्धिदात्री। जो समस्त वरदानों और सिद्धियों को देने वाली देवी मां सिद्धिदात्री हैं। यह कमल के पुष्प पर विराजमान हैं और इनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म है। यक्ष, गंधर्व, किन्नर, नाग, देवी-देवता और मनुष्य सभी इनकी कृपा से सिद्धियों को प्राप्त करते हैं। नवमी के दिन मां सिद्धिदात्री की उपासना करने से नवरात्रि के 9 दिनों की उपासना का फल मिलता है।

मां सिद्धिदात्री की पूजा विधि

नवमी के दिन शरीर और मन से शुद्ध रहते हुए मां के सामने बैठें। उनके सामने दीपक जलाएं और उन्हें नौ कमल के फूल अर्पित करें। मां सिद्धिदात्री को नौ तरह के खाद्य पदार्थ भी अर्पित करें। मां के मंत्र ꝛॐ ह्रीं दुर्गाय नमःꝛ का यथाशक्ति जाप करें। अर्पित किए हुए कमल के फूल को लाल वस्त्र में लपेटकर रखें। देवी को अर्पित किए हुए खाद्य पदार्थों को पहले निर्धनों में बांटें, फिर स्वयं भी ग्रहण करें।

भय मुक्त करेंगी मां सिद्धिदात्री

नवमी के दिन एक पान के पत्ते पर 9 साबुत फूलदार लौंग के साथ देसी कपूर रखें। 9 लाल गुलाब के फूलों के साथ देवी को अर्पण करके अपने अज्ञात भय को खत्म करने की प्रार्थना करें। इसके बाद 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे मंत्र' का 108 बार लाल आसन पर बैठकर जाप करें।

नवमी पर हवन का विशेष महत्व

नवमी के दिन हवन का विधान है। इस दिन नवरात्रि की पूर्णता के लिए हवन भी किया जाता है। इस दिन पहले पूजा करें और फिर हवन करें। हवन सामग्री में जौ और काला तिल मिलाएं। इसके बाद कन्या पूजन करें। कन्या पूजन के बाद सम्पूर्ण भोजन का दान करें।

माता सिद्धिदात्री के पास हैं 8 सिद्धियां

भक्त नवरात्रि के नौ दिनों तक उपवास और पूजा-अर्चना करके मां दुर्गा की कृपा पाते हैं और मनचाहा फल प्राप्त करते हैं। साथ ही, घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है। देवी-देवता, गंधर्व, ऋषि और असुर भी माता सिद्धिदात्री की पूजा करके 8 सिद्धियां प्राप्त कर सकते हैं और अंत में मोक्ष प्राप्त करते हैं।

नवरात्रि के 9वें दिन का भोग

मां सिद्धिदात्री को प्रसन्न करने के लिए भक्त कई तरह के भोग लगाते हैं। हलवा, पूरी, चना, फल, खीर और नारियल जैसे प्रसाद चढ़ाए जाते हैं। मान्यता है कि जामुनी या बैंगनी रंग के कपड़े पहनकर पूजा करने से विशेष फल मिलता है। भोग लगाने के बाद मां सिद्धिदात्री माता की विशेष रूप से आरती की जाती है।

हवन में इन चीजों का करें प्रयोग

आर्थिक लाभ के लिए- मखाने और खीर से हवन करें।

कर्ज मुक्ति के लिए- राई से हवन करें।

संतान संबंधी समस्याओं के लिए- माखन मिश्री से हवन करें।

ग्रह शान्ति के लिए- काले तिल से हवन करें।

सर्वकल्याण के लिए- काले तिल और जौं से हवन करें।

आचार्य पंडित सुधांशु तिवारी

नवरात्रि में कन्या पूजन से मिलेगी परेशानियों से मुक्ति....

श्री लक्ष्मीनारायण एस्ट्रो सॉल्यूशन अजमेर की निदेशिका ज्योतिषाचार्या एवं टैरो कार्ड रीडर नीतिका शर्मा ने बताया कि चैत्र नवरात्र 19 मार्च से शुरू हो गई है। वहीं इसका समापन 27 मार्च को होगा। चैत्र नवरात्रि की अष्टमी और रामनवमी 26 मार्च को मनाई जाएगी...

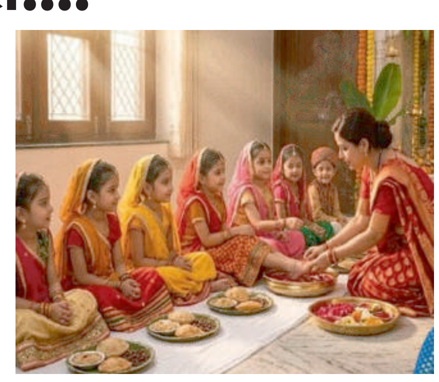

चैत्र नवरात्रि का प्रारंभ चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से होता है। इस साल इस बार चैत्र नवरात्रि 19 मार्च 2026 से प्रारंभ हो रहे हैं, जिसका समापन 27 मार्च होगा। चैत्र नवरात्रि की धूम पूरे देश में है। माता की भक्ति में लीन भक्तों को अब अष्टमी और नवमी का इंतजार है। चैत्र नवरात्रि की अष्टमी और रामनवमी 26 मार्च को मनाई जाएगी। श्री लक्ष्मीनारायण एस्ट्रो सॉल्यूशन अजमेर की निदेशिका ज्योतिषाचार्या एवं टैरो कार्ड रीडर नीतिका शर्मा ने बताया कि चैत्र नवरात्र 19 मार्च से शुरू हो गई है। वहीं इसका समापन 27 मार्च को होगा। चैत्र नवरात्रि की अष्टमी और रामनवमी 26 मार्च को मनाई जाएगी और चैत्र नवरात्रि की नवमी 27 मार्च को मनाई जाएगी। अष्टमी और नवमी पर कन्याओं को भोजन कराया जाता है। नवरात्र के दौरान अलग-अलग दिनों में देवी दुर्गा के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है। इन नौ दिनों में अष्टमी और नवमी तिथि सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। नवरात्रि के अष्टमी और नवमी तिथि कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है। व्रत रखने वाले भक्त कन्याओं को भोजन कराने के बाद ही अपना व्रत खोलते हैं। कन्याओं को देवी मां का स्वरूप माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन कन्याओं को भोजन कराने से घर में सुख, शांति एवं सम्पन्नता आती है। कन्या भोज के दौरान नौ कन्याओं का होना आवश्यक होता है। इस बीच यदि कन्याएं 10 वर्ष से कम आयु की हो तो जातक को कभी धन की कमी नही होती और उसका जीवन उन्नतशील रहता है।

नवरात्रि में कन्या पूजन का बहुत महत्व है। आमतौर पर नवमी को कन्याओं का पूजन करके उन्हें भोजन कराया जाता है। लेकिन कुछ श्रद्धालु अष्टमी को भी कन्या पूजन करते हैं। नवरात्रि में अष्टमी और नवमी के दिन कन्या भोजन का विधान ग्रंथों में बताया गया है। इसके पीछे भी शास्त्रों में वर्णित तथ्य यही हैं कि 2 से 10 साल तक उम्र की नौ कन्याओं को भोजन कराने से हर तरह के दोष खत्म होते हैं। कन्याओं को भोजन करवाने से पहले देवी को नैवेद्य लगाएं और भेंट करने वाली चीजें भी पहले देवी को चढ़ाएं। इसके बाद कन्या भोज और पूजन करें। कन्या भोजन न करवा पाएं तो भोजन बनाने का कच्चा सामान जैसे चावल, आटा, सब्जी और फल कन्या के घर जाकर उन्हें भेंट कर सकते हैं।

कन्या पूजन महाष्टमी और रामनवमी

नवरात्रि में कन्या पूजन या कुमारी पूजा, महाष्टमी और रामनवमी दोनों ही तिथियों को किया जाएगा। महाष्टमी को मां महागौरी और रामनवमी को मां सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। जिन घरों में महाष्टमी और महानवमी की पूजा होती है, वहां इस दिन कन्याओं को भोजन करवाया जाता है और उन्हें गिफ्ट बांटे जाते हैं।

पुराणों में है कन्या भोज का महत्व

पौराणिक धर्म ग्रंथों एवं पुराणों के अनुसार नवरात्री के अंतिम दिन कौमारी पूजन आवश्यक होता है। क्योंकि कन्या पूजन के बिना भक्त के नवरात्र व्रत अधूरे माने जाते हैं। कन्या पूजन के लिए अष्टमी और नवमी तिथि को उपयुक्त माना जाता है। कन्या भोज के लिए दस वर्ष तक की कन्याएं उपयुक्त होती हैं।

कन्या और देवी के शस्त्रों की पूजा

अष्टमी को विविध प्रकार से मां शक्ति की पूजा करें। इस दिन देवी के शस्त्रों की पूजा करनी चाहिए। इस तिथि पर विविध प्रकार से पूजा करनी चाहिए और विशेष आहुतियों के साथ देवी की प्रसन्नता के लिए हवन करवाना चाहिए। इसके साथ ही 9 कन्याओं को देवी का स्वरूप मानते हुए भोजन करवाना चाहिए। दुर्गाष्टमी पर मां दुर्गा को विशेष प्रसाद चढ़ाना चाहिए। पूजा के बाद रात्रि को जागरण करते हुए भजन, कीर्तन, नृत्यादि उत्सव मनाना चाहिए।

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 387, नई दिल्ली, शुक्रवार 27 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली में प्राइवेट बसें कर रही ट्रैफिक नियमों का जमकर उल्लंघन, हर दिन कट रहे 80 चालान
06 खेल व खिलाड़ियों में भाव परिवर्तन
08 रांची में रेल वाणिज्यिक निरीक्षण हिमांशु को पचास हजार घुस लेते सीबीआई ने किया गिरफ्तार

करोल बाग बस हादसा: चालक की लापरवाही उजागर प्राइवेट बसों के नियम उल्लंघन में दोगुनी बढ़ोतरी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में निजी बसों द्वारा यातायात नियमों के उल्लंघन के मामले तेजी से बढ़े हैं। करोल बाग बस दुर्घटना के बाद यह मुद्दा और उजागर हुआ। इस साल 24 मार्च तक 6,566 चालान काटे गए, जो पिछले साल की तुलना में दोगुने से अधिक हैं।

नई दिल्ली। करोल बाग में प्राइवेट बस के पलटने से दो लोगों की मौत मामले में चालक की लापरवाही सामने आई है। इस घटना ने राजधानी में इन बसों द्वारा यातायात नियमों के उल्लंघन को उजागर किया है। प्राइवेट बस ऑपरेटरों द्वारा ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन के मामलों में इस साल तेज बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

इस वर्ष एक जनवरी से 24 मार्च के बीच ट्रैफिक पुलिस ने अलग-अलग नियमों के उल्लंघन में 6,566 चालान काटे हैं। वहीं, बीते वर्ष इसी अवधि में यह संख्या 3,029 थी। आंकड़ों के मुताबिक, एक साल में ऐसे मामलों में दोगुने से भी अधिक वृद्धि हुई है। यानी इस वर्ष प्रतिदिन औसतन 80 चालान काटे गए हैं।

किन नियमों का उल्लंघन कर रही बसें?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, यह बढ़ोतरी केवल उल्लंघनों में इजाफा ही नहीं, बल्कि सख्त प्रवर्तन अभियान का भी परिणाम है। प्राइवेट बस चालकों और ऑपरेटरों के खिलाफ विशेष अभियान चलाए जा रहे हैं, जिसके तहत नियमों का उल्लंघन करने वालों पर लगातार कार्रवाई की जा रही है।

दरअसल, राजधानी की सड़कों पर चलने वाली कई प्राइवेट बसें यातायात नियमों की अनदेखी करती हैं। इनमें बिना वैध फिटनेस सर्टिफिकेट के बसों का संचालन, निर्धारित क्षमता से अधिक यात्रियों को बैठाना और तेज रफ्तार में वाहन चलाना शामिल है। इससे न केवल यात्रियों की सुरक्षा खतरे में पड़ती है, बल्कि अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए भी दुर्घटना का जोखिम बढ़ जाता है।

बसों के सुरक्षित संचालन को मजबूत होगी निगरानी

इसके अलावा, कई बसों के जरिए अन्य राज्यों से भारी मात्रा में सामान लाकर ओवरलोडिंग की जाती है। ऐसी बसें दिल्ली जैसे घनी आबादी वाले शहर में प्रवेश कर ट्रैफिक व्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं और हादसों की आशंका को बढ़ाती हैं। परिवहन नियमों का उल्लंघन करने वाली इन बसों पर निगरानी के लिए ट्रैफिक पुलिस ने चेकिंग अभियान और तकनीकी निगरानी को भी मजबूत किया है।

एडिशनल सीपी (ट्रैफिक) दिनेश गुप्ता के अनुसार, विभाग परमिट, गति सीमा और ओवरआल कंप्लायंस पर विशेष ध्यान दे रहा है। उन्होंने कहा कि बसों के सुरक्षित संचालन और यातायात नियमों के पालन को सुनिश्चित करने के लिए कड़े कदम उठाए जा रहे हैं।

मांझा फंसने से जाफराबाद मेट्रो लाइन पर धमाके जैसी आवाज, चिंगारी देख मचा हड़कंप; रोकनी पड़ी सेवाएं

पूर्वी दिल्ली के जाफराबाद मेट्रो स्टेशन के पास बृहस्पतिवार शाम पतंग के मांझे से ओवरहेड बिजली लाइनों में चिंगारी निकली, जिससे धमाके जैसी आवाज आई। यात्रियों को सुरक्षित निकाला गया और मेट्रो सेवाएं अस्थायी रूप से प्रभावित हुईं। पुलिस ने स्थिति को तुरंत संभाला और सुरक्षा जांच के बाद सेवाएं बहाल कर दी गईं।

दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के जाफराबाद मेट्रो स्टेशन के पास बृहस्पतिवार शाम मेट्रो लाइन से अचानक धमाके जैसी आवाज सुनाई दी। बाद में पता चला कि ओवरहेड बिजली लाइनों में पतंग का मांझा फंसने से चिंगारी निकली और हल्की आग लग गई। इस कारण मेट्रो सेवाएं कुछ समय के लिए प्रभावित रहीं।

पुलिस के अनुसार शाम करीब छह बजे सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और सीआइएसएफ की टीम मौके पर पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। एहतियात के तौर पर स्टेशन पर मौजूद यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। शुरुआती जांच में सामने आया कि आसपास कुछ बच्चे पतंग उड़ा रहे थे, इसी दौरान मांझा मेट्रो की बिजली लाइनों में उलझ गया। इससे चिंगारी निकली और मामूली आग लग गई। अधिकारियों ने बताया कि स्थिति को तुरंत काबू में कर लिया गया और सुरक्षा जांच के बाद मेट्रो सेवाएं फिर से सामान्य कर दी गईं। जांच में किसी भी तरह की साजिश या संदिग्ध गतिविधि की बात सामने नहीं आई है।प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि मेट्रो लाइन के आसपास पतंगबाजी से बचें, क्योंकि इससे यात्रियों और मेट्रो इंफ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html |
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

साइबर अपराध का वैश्विक दृष्टिकोण

2026 में धोखाधड़ी अभूतपूर्व स्तर पर पहुँच गई है। नागरिक कम जागरूकता के कारण असमान रूप से प्रभावित हो रहे हैं, जबकि जाँचकर्ता लगातार जटिल होती योजनाओं से जूझ रहे हैं। नुकसान चौंकाने वाले हैं—2025 में वैश्विक स्तर पर व्यवसायों ने अनुमानित 534 अरब अमेरिकी डॉलर खो दिए, और ब्राज़ील के 51% उपभोक्ताओं ने धोखाधड़ी का शिकार होने की रिपोर्ट दी। भारत भी साइबर धोखाधड़ी में तेज़ी से वृद्धि का सामना कर रहा है। यूपीआई और डिजिटल भुगतान से जुड़ी वित्तीय ठगी पूरे परिदृश्य पर हावी है। आधिकारिक आँकड़े बताते हैं कि हर साल दसियों हज़ार धोखाधड़ी के मामले दर्ज हो रहे हैं, भारी वित्तीय नुकसान हो रहा है और कम जागरूकता के कारण जनता की असुरक्षा लगातार बढ़ रही है।

📊 वैश्विक धोखाधड़ी परिदृश्य (2025)

- नुकसान का पैमाना
  - o व्यवसायों ने वार्षिक राजस्व का 7.7% धोखाधड़ी में खोया, कुल मिलाकर 534 अरब अमेरिकी डॉलर।
  - o व्यापारियों ने औसतन 10.6 मिलियन डॉलर का वार्षिक नुकसान बताया।

- पीड़ित दरें

- o 2025 में ब्राज़ील के 51% उपभोक्ता धोखाधड़ी के शिकार हुए (2024 में 42% से बढ़कर)।
- o 54% पीड़ितों ने सीधे पैसे खोए।
- o सर्वेक्षित व्यवसायों में धोखाधड़ी की घटनाएँ वर्ष-दर-वर्ष 77% बढ़ीं।

ड्ढ उपभोक्ता जागरूकता

- o विकसित बाज़ारों में ऑनलाइन धोखाधड़ी के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक है (अमेरिका 78%, यूके 77%), लेकिन संस्थानों पर भरोसा कमजोर है।
- o उभरते बाज़ारों में जागरूकता कम है, जिससे नागरिक अधिक असुरक्षित हैं।

नागरिकों और जाँचकर्ताओं के लिए चुनौतियाँ

- नागरिक
  - o कई लोगों को बुनियादी डिजिटल स्वच्छता का ज्ञान नहीं है (जैसे फ़िशिंग पहचानना, लिंक सत्यापित करना)।
  - o धोखेबाज़ सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का शोषण करते हैं, जिन पर उपभोक्ता का भरोसा सबसे कम है।

- जाँचकर्ता

- o धोखाधड़ी योजनाएँ अब समझौता किए गए पहचान डेटा और एआई-आधारित हमलों पर निर्भर हैं, जिससे पारंपरिक पहचान प्रणालियाँ विफल हो रही हैं।
- o अक्सर बिना पर्याप्त सबूत के संदिग्ध दावों को वापस करने का दबाव होता है, जिससे निवारण कमजोर पड़ता है।

धोखाधड़ी प्रवृत्तियाँ और उनके प्रभाव

1. **पहचान चोरी**
   - o नागरिकों पर प्रभावः सीधा आर्थिक नुकसान, प्रतिष्ठा को हानि।
   - o जाँचकर्ताओं पर प्रभावः वैश्विक डेटा उल्लंघनों के कारण ट्रेस करना कठिन।
2. एआई-आधारित धोखाधड़ी
   - o नागरिकों पर प्रभावः वॉइस क्लोनिंग और डीपफेक तकनीक से अधिक विश्वसनीय धोखाधड़ी।
   - o जाँचकर्ताओं पर प्रभावः हमलावरों की जटिलता के मुकाबले पहचान प्रणालियाँ पिछड़ रही हैं।
3. सोशल मीडिया धोखाधड़ी
   - o नागरिकों पर प्रभावः धोखाधड़ी का उच्च जोखिम, प्लेटफ़ॉर्म पर भरोसा घटता हुआ।
   - o जाँचकर्ताओं पर प्रभावः सीमित अधिकार क्षेत्र और प्रवर्तन क्षमता।
4. रिफंड दबाव
   - o नागरिकों पर प्रभावः धोखेबाज़ रिफंड की खामियों का फायदा उठाकर बार-बार प्रयास करते हैं।
   - o जाँचकर्ताओं पर प्रभावः सक्रिय रोकथाम की बजाय प्रतिक्रियात्मक, केस-दर-केस निपटान।

⚠ जोखिम और कार्य बिंदु

- नागरिकों के लिए
  - o फ़िशिंग, ओटीपी दुरुपयोग और नकली निवेश योजनाओं पर केंद्रित जागरूकता अभियान मजबूत करें।
  - o मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन और केवल आधिकारिक ऐप/वेबसाइट का उपयोग प्रोत्साहित करें।

✓ निष्कर्ष

2025 में धोखाधड़ी केवल वित्तीय अपराध नहीं है—यह एक प्रणालीगत खतरा है जो नागरिक जागरूकता और जाँचकर्ता तैयारी की खामियों का फायदा उठाता है। कम डिजिटल साक्षरता वाले क्षेत्रों में नागरिक असमान रूप से प्रभावित होते हैं, जबकि जाँचकर्ता तेजी से विकसित होती धोखाधड़ी रणनीतियों के खिलाफ कमज़ोर हैं। इस अंतर को पाटने के लिए सार्वजनिक शिक्षा और तकनीकी निवेश की दोहरी रणनीति आवश्यक है।

तेलंगाना में राज्य जल सचिवों का क्षेत्रीय सम्मेलन, केंद्र-राज्य समन्वय को मजबूत करने पर जोर

संगिनी घोष

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के सचिव वी. एल. कांता राव ने तेलंगाना में आयोजित राज्य जल सचिवों के क्षेत्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन का उद्देश्य जल क्षेत्र से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा और समन्वय को मजबूत करना था।

सम्मेलन के दौरान चल रही विभिन्न जल परियोजनाओं और योजनाओं के कार्यान्वयन की समीक्षा की गई। अधिकारियों ने परियोजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों, सुधार की संभावनाओं और समयबद्ध कार्यान्वयन पर चर्चा की।

बैठक में केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया, ताकि जल संसाधन प्रबंधन, सिंचाई और संरक्षण से जुड़े मुद्दों का प्रभावी समाधान किया जा सके।

यह सम्मेलन राज्यों के बीच अनुभव साझा करने और जल क्षेत्र में बेहतर रणनीति तैयार करने का एक महत्वपूर्ण मंच बना।

ऐसे देखें तो यह सम्मेलन सहकारी संघवाद को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जहां केंद्र और राज्य मिलकर जल संसाधनों के सतत प्रबंधन की दिशा में काम कर रहे हैं।

मुख्य बिंदु

* वी. एल. कांता राव ने सम्मेलन की अध्यक्षता की
* तेलंगाना में आयोजित हुआ राज्य जल सचिवों का क्षेत्रीय सम्मेलन
* चल रही जल योजनाओं के कार्यान्वयन की समीक्षा
* केंद्र-राज्य समन्वय को मजबूत करने पर जोर
* जल प्रबंधन में बेहतर रणनीति और सहयोग पर चर्चा

SEO Meta Description:

तेलंगाना में आयोजित राज्य जल सचिवों के सम्मेलन में जल परियोजनाओं की समीक्षा और केंद्र-राज्य समन्वय को मजबूत करने पर जोर दिया गया।

बढ़ते प्रदूषण से बड़ी राहत, 2025 में भारत का CO उत्सर्जन सिर्फ 0.7% बढ़ा; 24 साल में सबसे धीमी रफ्तार

सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (CREA) की रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में भारत के CO_2 उत्सर्जन में मात्र 0.7% की वृद्धि दर्ज की गई, जो पिछले 24 सालों में सबसे धीमी रफ्तार है।

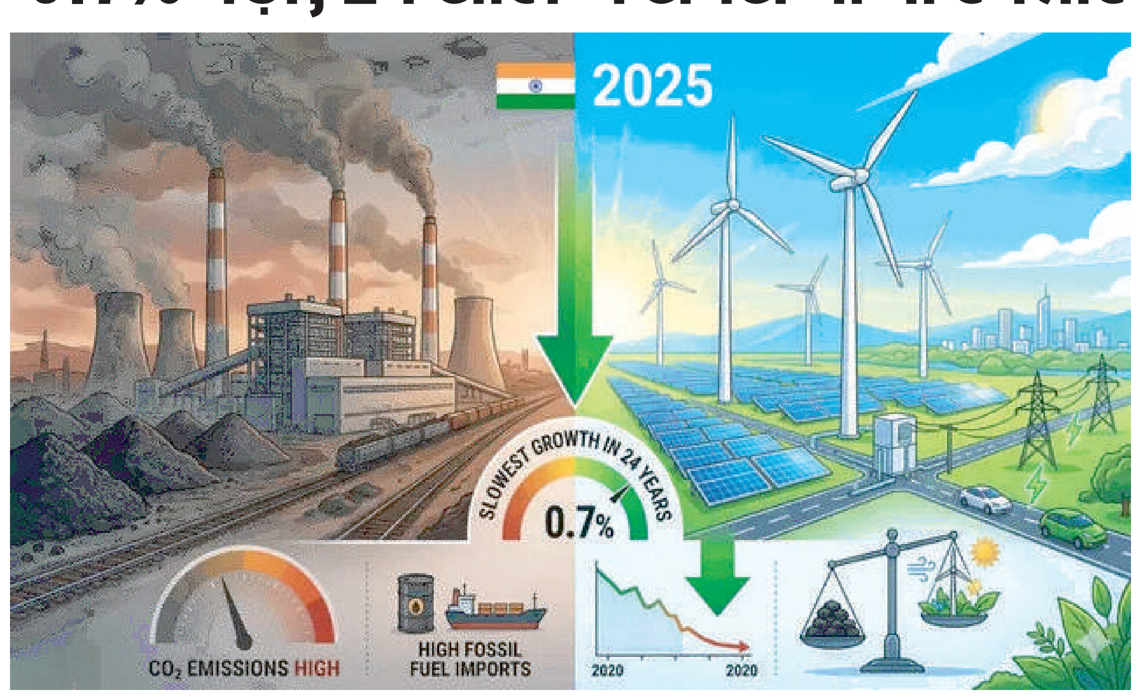

नई दिल्ली। भारत की पर्यावरण सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में एक बड़ी खबर सामने आई है। ताजा रिपोर्ट के अनुसार, साल 2025 में भारत के कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) उत्सर्जन में मात्र 0.7% की बढ़ोतरी हुई है।

अगर कोरोना काल (2020) को छोड़ दें, तो यह पिछले 24 सालों में उत्सर्जन बढ़ने की सबसे धीमी रफ्तार है। सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (CREA) के नए विश्लेषण से पता चलता है कि भारत अब प्रदूषण कम करने के एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है।

बिजली क्षेत्र में आया बड़ा बदलाव

इस सकारात्मक बदलाव का सबसे बड़ा कारण बिजली क्षेत्र में सुधार है। बिजली पैदा करने के दौरान होने वाले उत्सर्जन में 3.8% की कमी आई है। इसके पीछे दो मुख्य कारण रहेः-

रिकॉर्ड सौर और पवन ऊर्जाः भारत ने स्वच्छ ऊर्जा (Renewable Energy) बनाने की क्षमता में ऐतिहासिक बढ़ोतरी की है।

बिजली की कम मांगः पिछले कुछ वर्षों में बिजली की मांग जहाँ 7% से ज्यादा की रफ़्तार से बढ़ रही थी, वह 2025 में घटकर मात्र 1% रह गई।

इन कारणों से कोयले से बनने वाली बिजली पर निर्भरता कम हुई है। रिपोर्ट के अनुसार, 2026 वह साल हो सकता है जब नई स्वच्छ ऊर्जा की रफ़्तार बिजली की कुल मांग से भी आगे निकल जाएगी।

विदेशी ईंधन पर निर्भरता हुई कम

भारत ने न केवल प्रदूषण कम किया, बल्कि अपनी ऊर्जा सुरक्षा को भी मज़बूत किया है। विश्लेषण बताता है किः

बिजली घरों में इस्तेमाल होने वाले आयातित कोयले में 20% की भारी कमी आई है।

गैस के आयात में भी 6% की गिरावट दर्ज की गई।

पेट्रोल-डीजल (तेल) की मांग में भी नाममात्र (0.4%) की वृद्धि हुई।

CREA की विश्लेषक अनुभा अग्रवाल के अनुसार, विदेशी ईंधन पर निर्भरता कम होने से वैश्विक बाज़ारों में होने वाली उथल-पुथल का असर भारत पर कम पड़ेगा, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी खबर है।

चुनौतियां अभी भी बाकी हैं।

जहाँ एक तरफ बिजली क्षेत्र में सुधार दिख रहा है, वहीं लोहा (इस्पात) और सीमेंट उद्योगों में उत्सर्जन अभी भी बढ़ रहा है। इस्पात क्षेत्र में 8% और सीमेंट क्षेत्र में 10% की वृद्धि दर्ज की गई है, जिसके कारण कुल उत्सर्जन में मामूली बढ़त बनी हुई है।

विशेषज्ञों का कहना है कि राजस्थान, गुजरात और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने स्वच्छ ऊर्जा के मामले में लक्ष्य हासिल कर लिया है। यदि यही रुझान पूरे देश में बना रहता है, तो भारत बहुत जल्द कोयले के युग से बाहर निकलकर हरित ऊर्जा के दौर में प्रवेश कर जाएगा।

एलपीजी आपूर्ति को लेकर स्थिति सामान्य, जिला में पर्याप्त स्टॉक : डीसी

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल का आह्वान, किसी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें उपभोक्ता

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 26 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला के नागरिकों को आश्वस्त किया है कि जिला में एलपीजी गैस की कोई कमी नहीं है और आपूर्ति पूरी तरह से सुचारू रूप से जारी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिला प्रशासन और संबंधित विभाग के अधिकारी लगातार फील्ड में निगरानी रख रहे हैं ताकि उपभोक्ताओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

उपायुक्त ने आमजन से अपील की है कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें और पैनिक बुकिंग न करें।

उन्होंने कहा कि गैस की कालाबाजारी किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी और यदि कोई इसमें संलिप्त पाया जाता है तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

उन्होंने बताया कि जिला की विभिन्न गैस एजेंसियों के पास वर्तमान में पर्याप्त मात्रा में गैस का स्टॉक उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न तेल कंपनियों के प्लांट से लगातार सप्लाई प्राप्त हो रही है, जिससे आने वाले दिनों में भी आपूर्ति निर्बाध बनी रहेगी।

शादियों और अन्य सरकारी कार्यों के लिए भी मांग के अनुसार कमर्शियल सिलेंडरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। प्रशासन का मुख्य ध्येय उपभोक्ताओं को उनके घर द्वार पर ही समय पर गैस उपलब्ध करवाना है, जिसके लिए टीमें निरंतर कार्य कर रही हैं।

खाद्य आपूर्ति विभाग निरन्तर कर रहा है गैस एजेंसियों की मॉनीटिरिंग

दूसरी ओर जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि सहायक खद्य एवं आपूर्ति अधिकारी झज्जर अमरजीत सिंह और सपना रानी अपनी टीम के साथ विभिन्न गैस एजेंसियों और गोदामों का दौरा कर रहे हैं। अधिकारी मौके पर मौजूद उपभोक्ताओं को समझा रहे हैं कि विभाग होम डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है, इसलिए वे पैनिक न हों।

उन्होंने कहा कि गोदाम से डिलीवरी लेने पर उपभोक्ता केवल निर्धारित राशि 885 रुपये ही दें। उन्होंने एजेंसी संचालकों को हिदायत दी गई कि वे उपभोक्ताओं को उनके घर पर ही गैस पहुंचाएं और केवल आपातकालीन स्थिति में ही गोदाम से डिलीवरी दें। साथ ही, सभी एजेंसियों को प्रतिदिन का रूट चार्ट चस्पा करने के निर्देश दिए गए ताकि ग्रामीणों को पता रहे कि उनके क्षेत्र में गाड़ी किस दिन आएगी।

देवी दर्शन से मन को मिलती है शांति : स्वप्निल मोहिनी पाटिल

परिवहन विशेष न्यूज

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल की धर्मपत्नी एवं जिला बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष स्वप्निल मोहिनी पाटिल ने किए माता भीमेश्वरी देवी के दर्शन

झज्जर, 26 मार्च। जिला उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल की धर्मपत्नी एवं जिला बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष स्वप्निल मोहिनी पाटिल ने वीरवार की सुबह अष्टमी को माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में पहुंचकर विधि-विधान से पूजा-अर्चना की और क्षेत्र की सुख-समृद्धि व खुशहाली की कामना की।

मंदिर परिसर में पहुंचने पर माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ एवं एसडीएम रेणुका नांदल ने मोहिनी पाटिल का स्वागत किया।

जिला बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष मोहिनी पाटिल ने मां भीमेश्वरी देवी के दर्शन करते हुए विधिवत रूप से पूजा अर्चना की। देवी मंदिर के प्रमुख पुजारी पंडित कुलदीप वशिष्ठ ने स्वप्निल मोहिनी पाटिल को ऐतिहासिक कस्बा बेरी और माता भीमेश्वरी देवी के दोनों मंदिरों से जुड़े इतिहास की विस्तार से जानकारी दी।

स्मरण रहे विश्व प्रसिद्ध माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में नवरात्रों के अलावा प्रतिदिन दूर दराज से श्रद्धालु दर्शन के आते हैं और पूजा अर्चना के साथ मन्नतें मांगते हैं।

जिला बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष स्वप्निल मोहिनी पाटिल ने कहा कि ऐसे धार्मिक स्थलों पर आकर मन को शांति मिलती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

इस दौरान एएसआर राजेश खत्री, बीडीपीओ राजाराम, नपा सचिव पूजा साहू, जन स्वास्थ्य विभाग से अरुण मलिक, प्रवीण मलिक, जेई रोहित लोहचब सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

बेरी मेले में कानूनी हेल्प डेस्क पर जानकारी लेने में श्रद्धालुओं ने दिखाई रुचि

परिवहन विशेष न्यूज

जिला विधिक प्राधिकरण द्वारा बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर में स्थापित स्टाल एक हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने ली योजनाओं की जानकारी

बेरी (झज्जर), 26 मार्च। धर्मनगरी बेरी में चल रहे माता भीमेश्वरी देवी नवरात्र मेले के दौरान एक हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने माता दर्शन उपरांत

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा स्थापित स्टाल पर कानूनी जानकारी ली।

गौरतलब है कि जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री राजकुमार यादव के कुशल मार्गदर्शन और सीजेएम विशाल के निर्देश अनुसार आमजन को कानूनी रूप से जागरूक करने के उद्देश्य से मेला परिसर में हेल्प डेस्क स्थापित किया गया है।

सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने बताया कि

इस हेल्प डेस्क के माध्यम से मेले में आने वाले श्रद्धालुओं और आम नागरिकों को विभिन्न कानूनी अधिकारों और योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। उन्होंने बताया कि एक हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (हालसा) और राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) द्वारा चलाई जा रही जनहितकारी योजनाओं की जानकारी लेने में रुचि दिखाई

उन्होंने आगे बताया कि स्टाल पर विशेष रूप से राष्ट्रीय लोक अदालत, स्थायी लोक अदालत (परमानेंट लोक अदालत), सामुदायिक मध्यस्थता केंद्र, निःशुल्क कानूनी सहायता और अन्य विधिक सेवाओं के बारे में सरल भाषा में समझाया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि आमजन अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और किसी भी कानूनी समस्या का समाधान सरल और सुलभ तरीके से प्राप्त कर सकें।

उन्होंने बताया कि मेले को लेकर प्राधिकरण द्वारा पीएलवी की ड्यूटी लगाई गई हैजो स्टाल पर आने वाले लोगों को मार्गदर्शन देने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

दूसरी ओर पीएलवी नवीन कुमारी, सरोज देवी, अमला व बबीता ने बताया कि इस पहल से लोगों मेंअच्छा रेस्पॉन्स मिल रहा है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रयास समाज में कानूनी साक्षरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं से प्राधिकरण द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया है।

डीसी की अध्यक्षता में छुड़ानी में रात्रि ठहराव कार्यक्रम आज

परिवहन विशेष न्यूज

कार्यक्रम में विभागीय स्टॉल व स्वास्थ्य जांच शिविर के माध्यम से मिलेगी योजनाओं की जानकारी एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस ने दी जानकारी

बहादुरगढ़, 26 मार्च। प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की पहल पर जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक माह आयोजित किए जाने वाले रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार 27 मार्च को खंड बहादुरगढ़ के गांव छुड़ानी स्थित बाबा हरिदास मंदिर परिसर में किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल करेंगे।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने बताया कि उपायुक्त ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासन को गांव स्तर तक पहुंचाकर आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निवारण करना है।

एसडीएम ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के लिए स्टॉल लगाए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सुविधा होगी। साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा, जहां नागरिकों की जांच कर आवश्यक परामर्श दिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम सरकार की महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से अधिकारियों को गांव की जमीनी स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने और विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने का अवसर मिलता है। इससे शासन और जनता के बीच संवाद और अधिक सुदृढ़ होता है।

उन्होंने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं और अपनी समस्याएं, सुझाव व मांगें प्रशासन के समक्ष रखें, ताकि गांव के सर्वांगीण विकास को और गति मिल सके।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने रूहिल डेवलपर प्राइवेट लिमिटेड और अन्य विभिन्न वसीकाओं में 11 लाख 02 हजार ,67 रुपए की बकाया स्टाम्प राशि निर्धारित समय में जमा कराने के जारी

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़ 26 मार्च । उपमंडल अधिकारी (नागरिक) एवं कलेक्टर अभिनव सिवाच ने रुहिल डेवलपर प्राइवेट लिमिटेड और अन्य विभिन्न वसीकों (रजिस्ट्री मामलों) में कलेक्टर रेट से कम स्टाम्प ड्यूटी जमा कराने के मामले में कड़ा संज्ञान लिया है। जांच के दौरान सामने आया कि रुहिल डेवलपर प्राइवेट लिमिटेड सहित अन्य प्रकरणों में निर्धारित कलेक्टर दरों के अनुरूप स्टाम्प शुल्क का पूर्ण भुगतान नहीं किया गया, जिससे राजस्व को नुकसान पहुंचा।

मामले की विस्तृत समीक्षा के उपरांत एसडीएम एवं कलेक्टर ने कुल 11,02,067 (11 लाख,2 हजार 67 रुपए) की बकाया स्टाम्प ड्यूटी निर्धारित समयावधि में जमा कराने के आदेश जारी किए हैं। आदेशों में स्पष्ट किया गया है कि यदि निर्धारित अवधि के भीतर राशि जमा नहीं कराई गई तो नियमानुसार सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। प्रशासन ने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में किसी भी प्रकार की स्टाम्प ड्यूटी संबंधी अनियमितता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और सभी रजिस्ट्री मामलों में कलेक्टर रेट के अनुसार ही शुल्क की वसूली सुनिश्चित की जाएगी ।एसडीएम एवं कलेक्टर ने आमजन एवं संपत्ति क्रय-विक्रय से जुड़े पक्षों से अपील की है कि वे निर्धारित नियमों एवं कलेक्टर दरों का पालन करें।

बेरी में दुर्गा अष्टमी पर माता भीमेश्वरी देवी दर्शन के लिए उमड़े श्रद्धालु

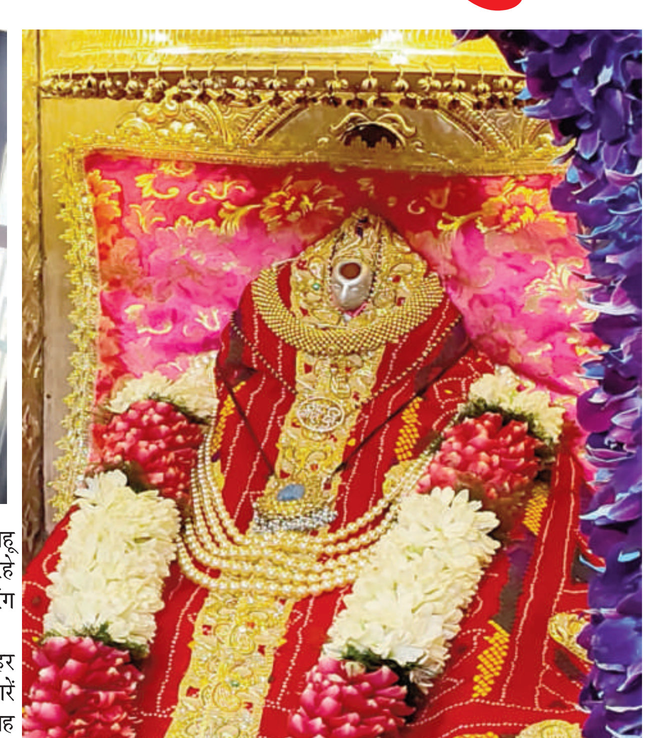

परिवहन विशेष न्यूज

उपमंडल प्रशासन ने मेले के दृष्टिगत श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर किए पुख्ता इंतजाम सुरक्षा,पेयजल, स्वास्थ्य, स्वच्छता, आदि इंतजामों से सुचारू बनी रही देवी मेले में व्यवस्था

बेरी, (झज्जर) 26 मार्च। धर्मनगरी बेरी में माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में मुख्य मेले में अष्टम नवरात्र पर लाखों श्रद्धालुओं ने देवी दर्शन कर पूजा अर्चना की। बुधवार रात से ही बाहर वाले मंदिर में श्रद्धालुओं की कतार लग गई थी और सुबह होते-होते माता के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। दर्शन के लिए आए श्रद्घालुओं ने अच्छी व्यवस्था के लिए प्रशासन की सराहना भी की।

विदित है कि गत 19 मार्च से बेरी के माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में चैत्र नवरात्र मेले की शुरुआत हुई थी।

नवरात्र मेला को लेकर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के मार्गदर्शन में प्रशासन की ओर से बेहतर एवं पुख्ता इंतजाम किए गए थे। सुरक्षा से लेकर पेयजल, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सहित अन्य प्रबंधों पर इस बार विशेष ध्यान दिया गया है।

वीरवार की अलसुबह से ही माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ एवं एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसीपी अनिरुद्ध चौहान,बीडीपीओ राजा राम, नपा सचिव पूजा साहू देवी मन्दिर परिसर में मौजूद रहे और लगातार मेले की मॉनिटरिंग की।

सप्तमी की रात से ही बाहर वाले मंदिर में श्रद्धालुओं की कतारें लगनी शुरू हो गई थी और सुबह तक तो माता के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का पूरा हुजूम उमड़ पड़ा। इस बार नवरात्र मेले में की गई व्यवस्थाओं की समीक्षा की बात की जाए तो निश्चित तौर पर बेरी उपमंडल प्रशासन बधाई का पात्र है। सुरक्षा के लिए लगभग सात सौ पुलिसकर्मियों के अलावा महत्वपूर्ण स्थानों पर लगभग 100 सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से कड़ी नजर रखी गई। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा संचालित खोया पाया केंद्र पर कर्मियों ने सराहनीय कार्य करते हुए श्रद्धालुओं की समस्याओं के समाधान में अहम भूमिका निभाई। वहीं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा लगाए गए स्टॉल पर पीएलवी नवीन कुमारी, सरोज देवी से श्रद्धालुओं ने विभिन्न योजनाओं और अन्य कानूनी जानकारी हासिल की।

इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने के बाद भी प्रशासन की व्यवस्थाएं अच्छी रही और श्रद्धालुओं ने बेहतर व्यवस्था के लिए प्रशासन की सराहना भी की।

बेरी में बिजली अदालत व उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक आज

बेरी(झज्जर), 26 मार्च , बेरी क्षेत्र के उपभोक्ताओं की बिजली एवं बिल संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु बिजली अदालत और उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक 27 मार्च (शुक्रवार) को आयोजित की जाएगी। बैठक सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक बिजली उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम, उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम बेरी कार्यालय में संपन्न होगी। यह जानकारी एसडीओ सुनील कुमार ने दी। एसडीओ ने बताया कि

बैठक की अध्यक्षता निगम के कार्यकारी अभियंता और उपमंडल अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से की जाएगी। इस दौरान उपभोक्ताओं की बिजली एवं बिल से संबंधित सभी शिकायतें मौके पर ही सुनी जाएंगी और यथासंभव वहीं समाधान किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि कोई उपभोक्ता कार्यकारी अभियंता बेरी द्वारा किए गए निर्णय से संतुष्ट नहीं है, तो वह अपनी शिकायत अध्यक्ष, अभियंता यूएचबीवीएन झज्जर के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

एसडीओ ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस समाधानात्मक प्रक्रिया का लाभ उठाएं।

चिंतामणि कुंज में अष्टमी पर हुआ सैकड़ों कन्याओं-लांगुराओं का पूजन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड़ स्थित चिंतामणि कुंज में चैत्र नवरात्रि के उपलक्ष्य में चल रहे दस दिवसीय शतचंडी महायज्ञ के अंतर्गत वेदज्ञ विप्रों के द्वारा दैनिक दुर्गा सप्तशती पाठ एवं हवन आदि के कार्यक्रम किए जा रहे हैं।इसी के चलते अष्टमी के दिन सैकड़ों कन्याओं-लांगुराओं का पूजन-अर्चन करके उन्हें भोजन प्रसाद ग्रहण कराया गया।साथ ही उन्हें वस्त्र, दक्षिणा व दैनिक उपयोग की वस्तुएं वितरित की गई।

चिंतामणि कुंज पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद महाराज ने कहा कि चिंतामणि कुंज हमारे सदगुरुदेव ब्रह्मलीन श्रीश्री 1008 स्वामी शिवमूर्ति महाराज की साधना स्थली है।यहां पर उनके परमाणु आज भी यहां के कण-कण में व्याप्त हैं।उन्ही के प्रताप से प्रतिवर्ष की दोनों नवरात्रों में कन्याओं-लांगुराओं का पूजन अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ किया जाता है।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं आचार्य बद्रीश महाराज ने कहा कि चिंतामणि कुंज में स्थापित देवी मां की प्रतिमा अत्यंत दिव्य व भव्य है।उनके दर्शन करने मात्र से सभी की सभी मनोकामनाएं निश्चित ही पूर्ण होती हैं।इसीलिए यहां आने वाले भक्तों व श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

ब्रजभूमि कल्याण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ एवं महंत मोहिनी बिहारी शरण महाराज ने कहा कि नवरात्रों में कन्या पूजन का विशेष महत्व है। इन दिनों कन्याओं-लांगुराओं का पूजन-अर्चन करके प्रसाद ग्रहण कराने से मां दुर्गा अति शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करती हैं।

कला, अभिव्यक्ति और बदलाव का माध्यम- थिएटर (रंगमंच) 27 मार्च दिवस विशेष आलेख

-सुनील कुमार महला

हर वर्ष 27 मार्च को विश्व रंगमंच दिवस (वर्ल्ड थिएटर डे) मनाया जाता है। वास्तव में,इसकी शुरुआत वर्ष 1961 में इंटरनेशनल थिएटर इंस्टीट्यूट (आइटीआइ) द्वारा की गई थी, जो यूनेस्को से जुड़ा एक प्रमुख सांस्कृतिक संगठन है।पाठक जानते होंगे कि रंगमंच(थिएटर)को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि यह केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं है, बल्कि यह विचार, संवेदना और सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है।सच तो यह है कि थिएटर लोगों को सोचने, महसूस करने और बदलाव की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यह विभिन्न देशों की संस्कृतियों, वहां के लोगों के विचारों और उनके संघर्षों को समझने में सहायता करता है तथा वैश्विक तनाव, युद्ध और सामाजिक विभाजन के दौर में मानवता को जोड़ने वाली कला के रूप में कार्य करता है। साथ ही, यह शिक्षा, साक्षरता, संवाद, सहिष्णुता और शांति को बढ़ावा देता है।सरल शब्दों में कहें तो 'रंगमंच' वह मंच है, जहाँ अभिनय, संवाद, संगीत, नृत्य और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से किसी कथा या विचार को जीवंत रूप दिया जाता है। अर्थात्यह साहित्य, कला और समाज का अनूठा संगम है। रंगमंच के महत्व के बारे में समझाते हुए अंग्रेजी भाषा के महान नाटककार विलियम शेक्सपियर ने प्रसिद्ध नाटक 'ऐज यू लाइक इट' में यह बात कही थी कि-'सारी दुनिया एक रंगमंच है, और सभी स्त्री-पुरुष केवल पात्र हैं।' वास्तव में, इस विचार के माध्यम से शेक्सपियर बताते हैं कि पूरा संसार एक रंगमंच के समान है, जहाँ हर व्यक्ति एक अभिनेता की तरह अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाता है। जीवन के अलग-अलग चरण- बचपन, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और बुढ़ापा- मानो किसी नाटक के विभिन्न दृश्य हैं, जिनमें इंसान समय के अनुसार अपने किरदार बदलता रहता है। इस प्रकार रंगमंच केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि मानव जीवन और समाज का सजीव प्रतिबिंब भी है।

भारतीय रंगमंच के इतिहास की यदि हम यहां पर बात करें तो भारतीय रंगमंच का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी है, जिसकी जड़ें वैदिक काल तक जाती हैं। उस समय यज्ञ, मंत्र, सामगान और धार्मिक अनुष्ठानों में संवाद, अभिनय, संगीत और नृत्य के प्रारंभिक रूप दिखाई देते हैं। इस परंपरा को व्यवस्थित स्वरूप देने का श्रेय भरतमुनि को जाता है, जिन्होंने नाट्य शास्त्र की रचना की। पाठकों को बताता चलूं कि यह ग्रंथ अभिनय (आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्त्विक), रंगमंच संरचना, संगीत, नृत्य और 'रस सिद्धांत' का विस्तृत विवेचन करता है।इसके बाद संस्कृत नाटकों का स्वर्णकाल आया, जिसमें कालिदास, भास और शूद्रक जैसे नाटककारों ने अभिज्ञानशाकुंतलम्, स्वप्नवासवदत्तम् और मृच्छकटिकम् जैसे महान नाटकों की रचना की। वास्तव में, इन रचनाओं में प्रेम, प्रकृति, नीति और मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है।मध्यकाल में रंगमंच(थिएटर) लोकजीवन से जुड़ गया और रामलीला, रासलीला, नौटंकी, यक्षगान और जत्रा जैसे लोकनाट्य विकसित हुए। इसी समय कथकली, कुचिपुड़ी और भरतनाट्यम जैसी नृत्य-नाट्य परंपराएँ भी विकसित हुईं, जिनमें वेशभूषा, मुखाभिनय और मुद्राओं के माध्यम से कथा प्रस्तुत की जाती है।आधुनिक काल में, विशेषकर ब्रिटिश शासन के दौरान, पाश्चात्य रंगशैली का प्रभाव पड़ा। इस दौर में यथार्थवाद, सामाजिक आलोचना और प्रयोगधर्मिता बढ़ी। उल्लेखनीय है कि हबीब तनवीर, विजय तेंदुलकर और गिरीश कर्नाड जैसे रंगकर्मियों ने सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय मुद्दों को मंच पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। इस प्रकार भारतीय रंगमंच ने वैदिक परंपरा से लेकर आधुनिक प्रयोगधर्मी रूप तक लंबी यात्रा तय की है।

इस दिवस का मुख्य उद्देश्य रंगमंच और कलाकारों के महत्व को समझाना और बढ़ावा देना है। वास्तव में इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य क्रमशः रंगमंच कला के प्रति जागरूकता फैलाना, विभिन्न कलाकारों, लेखकों और तकनीकी कर्मियों के योगदान को सम्मान देना, सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना तथा सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय मुद्दों पर संवाद स्थापित करना है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2025 की थीम-'थिएटर और शांति की संस्कृति' रखी गई थी।इसका अर्थ है कि थिएटर के माध्यम से शांति, सह-अस्तित्व और संवाद को बढ़ावा देना। इस वर्ष यानी कि वर्ष 2026 में इसका मुख्य फोकस वैश्विक सहभागिता और सांस्कृतिक संवाद पर रहा है। यहां यह भी गौरतलब है कि वर्ष 2026 में विश्व रंगमंच दिवस का 64वाँ आयोजन 25-27 मार्च के बीच लक्जमबर्ग शहर में किया गया। यह आयोजन आइटीआइ के जनरल सेक्रेटेरिएट और लक्ज़मबर्ग सेंटर के सहयोग से थिएटर फेडरेशन के साथ आयोजित किया गया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह कार्यक्रम मंच(प्रदर्शन)कला दिवस के अंतर्गत हुआ और थिएटर फेडरेशन की 30वीं वर्षगांठ भी इसी दौरान मनाई गई। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष का आधिकारिक संदेश प्रसिद्ध अमेरिकी अभिनेता विलेम डेफ़ो द्वारा लिखा गया, जिन्हें चार बार अकादमी अवार्ड्स के लिए नामांकन मिला है तथा वर्ष 2018 में वेनिस फ़िल्म महोत्सव में कोप्पा वोल्पी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पाठकों को बताता चलूं कि आइटीआइ की स्थापना 1948 में हुई थी और इसका मुख्यालय पेरिस में स्थित है। इसके विश्वभर में 85 से अधिक केंद्र हैं। विश्व रंगमंच दिवस पर हर वर्ष एक प्रतिष्ठित कलाकार द्वारा संदेश दिया जाता है तथा वर्ष 1962 में पहला संदेश जीन कोक्टो ने दिया था। वर्ष 2002 में भारत के गिरीश कर्नाड को यह सम्मान मिला,जो महान नाटककार रहे हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यह संदेश 50 से अधिक भाषाओं में अनुवादित किया जाता है।कहा जाता है कि महान् कवि/लेखक कालिदास ने 'मेघदूत' की रचना भारत की पहली नाट्यशाला में की थी, जो छत्तीसगढ़ के रामगढ़ पहाड़ (अंबिकापुर क्षेत्र) में स्थित मानी जाती है। हमारे पुराणों में भी यम, यमी और उर्वशी जैसे पात्रों के संवादों में नाट्य तत्वों के प्रारंभिक संकेत मिलते हैं।भारतीय रंगमंच में नृत्य और नाटक का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

आज रंगमंच का प्रभाव फिल्मों, वेब-सीरीज और डिजिटल माध्यमों में भी देखा जा सकता है। थिएटर ने कई सच्ची घटनाओं और सामाजिक मुद्दों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। भारत में फिल्मों का व्यापक प्रभाव है। पाठक जानते होंगे कि साल 1957 में मदर इंडिया, 1988 में सलाम बॉम्बे तथा 2001 में लगान जैसी फिल्मों को प्रतिष्ठित ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया था।हालाँकि, ओटीटी प्लेटफॉर्म और डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव ने पारंपरिक सिनेमा और थिएटर को चुनौती भी दी है, फिर भी रंगमंच अपनी जीवंतता और प्रत्यक्ष संवाद के कारण आज भी विशिष्ट स्थान रखता है।

अंत में निष्कर्ष के तौर पर यही कहूंगा कि विश्व रंगमंच दिवस यह संदेश देता है कि रंगमंच केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण, संस्कृति का संवाहक और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। नाट्य शास्त्र से लेकर आधुनिक प्रयोगधर्मी रंगमंच तक इसकी यात्रा निरंतर विकास की कहानी है। आज के डिजिटल व एआइ के इस युग में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि यह मानवता, संवाद और संवेदनाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है। यह दिवस हमें प्रेरित करता है कि हम इस कला को संरक्षित करें, नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ और इसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाएं।

पौराणिक कहानियों का महत्व: केवल कथा नहीं, जीवन का मार्गदर्शन

माइथोलॉजी में छिपा है संस्कृति, नैतिकता और जीवन जीने का सार

चार्वी मानिकपुरी
ब्राइटन इंटरनेशनल स्कूल, रायपुर (छत्तीसगढ़)

क्या पौराणिक कहानियाँ सिर्फ छोटी-मोटी कहानियाँ और नैतिक सीख भर हैं? यदि ऐसा लगता है, तो यह धारणा अधूरी है। माइथोलॉजी अपने भीतर ऐसी गहराई समेटे हुए है, जो आज भी समाज को दिशा देती है। कुछ लोग इन्हें सत्य घटनाएँ मानते हैं, तो कुछ केवल कल्पना—लेकिन इनका प्रभाव निर्विवाद है।

पौराणिक कथाओं का स्वरूप और सांस्कृतिक महत्व

पौराणिक कहानियाँ इतिहास, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का संगम हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही कथाएँ, नाटकों और लोक परंपराओं के रूप में हमारे समाज में जीवित हैं। सरल शब्दों में, ये हमारे सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो हमें जीवन के मूल सिद्धांत सिखाती हैं।

रामायण, महाभारत और अन्य ग्रंथों की प्रासंगिकता

यदि हम रामायण, पंचतंत्र और महाभारत जैसे ग्रंथों को देखें, तो इनमें वर्णित पात्र और स्थान आज भी लोगों की आस्था का केंद्र हैं।

भगवान श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम और माता सीता को त्याग व स्वाभिमान का प्रतीक माना जाता है। वहीं श्रीकृष्ण की लीला और राधा का प्रेम मानव भावनाओं की गहराई को दर्शाता है।

इन ग्रंथों ने हमें सत्य, धर्म और कर्तव्य का महत्व समझाया है। भगवद गीता जैसे ग्रंथ आज भी लोगों को मानसिक शांति और जीवन का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

शिक्षा और प्रेरणा का स्त्रोत

पौराणिक कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन का ज्ञान देती हैं।

जैसे पंचतंत्र की शेर और खरगोश की कहानी हमें सिखाती है कि बुद्धि, बल से श्रेष्ठ होती है। एक छोटा-सा खरगोश अपनी चतुराई से शक्तिशाली शेर को पराजित कर देता है—यह संदेश आज के जीवन में भी उतना ही प्रासंगिक है।

जीवन दृष्टिकोण में परिवर्तन

श्रीराम का जीवन हमें सिखाता है कि कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए। यदि वे चुनौतियों से डरते, तो क्या वे आदर्श बन पाते?

इसी प्रकार, श्रीकृष्ण का उपदेश—

"कर्म करो, फल की चिंता मत करो"

हमें कर्मप्रधान जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

पौराणिक कहानियों को केवल मनोरंजन का साधन समझना उचित नहीं है। ये कथाएँ हमें जीवन का मूल्य, नैतिकता और सही मार्ग चुनने की प्रेरणा देती हैं।

इसलिए, इन्हें पढ़ें, समझें और अपने जीवन में उतारें—क्योंकि यही कहानियाँ हमें बेहतर इंसान बनने की राह दिखाती हैं।

कानपुर में मंगलसूत्र लूटने वाले दो बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार, माल बरामद

सुनील बाजपेई

कानपुर। पुलिस की सक्रियता के बाद भी जिले में लूट की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। इसके खिलाफ पुलिस भी लगातार बदमाशों पर अपना शिकंजा कसने की कोशिश में जुटी है ,जिसके फल स्वरुप ही उसने मंगलसूत्र लूटने वाले दो शातिर अपराधियों को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया। इनमें से गोली से घायल बदमाश को इलाज के लिए अस्पताल में भी भर्ती कराया गया है। अब पुलिस इनके फरार साथियों की भी तलाश कर रही है। यह घटना चकेरी थाना क्षेत्र की है

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार महिला सिविल डिफेंस कर्मी अनीता श्रीवास्तव से बीते शनिवार को मंगलसूत्र लूट लिया गया था। इसके कुछ ही समय बाद आरोपितों ने एक अन्य युवती से भी पर्स लूट लिया था।

इसके बाद पुलिस दोनों बदमाशों की तलाश लगातार कर रही थी। इसी दौरान पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि दोनों आरोपी क्षेत्र में मौजूद हैं। जिस पर पुलिस ने सनिगवां स्थित अलकनंदा रेलवे ओवरब्रिज के पास उन्हें रोकने का प्रयास किया। इस दौरान बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दी।

जवाबी कार्रवाई में एक आरोपी के पैर में गोली लगी, जबकि दूसरे को दौड़ाकर पकड़ लिया गया। पुलिस ने बताया कि मुठभेड़ में गिरफ्तार बदमाशों की पहचान एहतेशाम और रियान के रूप में हुई है। उनके पास से लूटा गया मंगलसूत्र और एक अवैध तमंचा भी बरामद किया गया है। घायल आरोपी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अब पुलिस इसके साथियों की भी तलाश कर रही है।

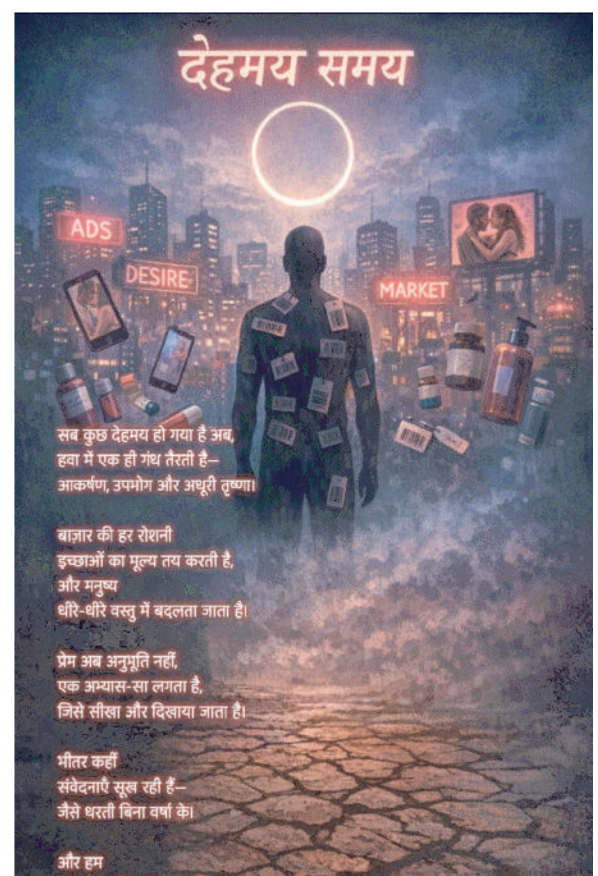

सरला से मुलाक़ात एक अफ़साना
डॉ मुश्ताक अहमद शाह

शहर की सुबहें हमेशा भागमभाग वाली होती हैं। ट्रैफ़िक का शोर, हॉर्न की आवाज़ें, और टैक्सी स्टैंड पर भीड़। उसी स्टैंड पर पहली बार उनकी मुलाक़ात हुई। वह ऑफ़िस जा रहा था, बारिश हो रही थी, और टैक्सी का इंतज़ार लंबा खिंच रहा था। उसने देखा, एक लड़की सादा सलवार सूट में, बाल जुल्फ़ों की तरह बिख़रे,चेहरे को चूम रहे थे,साइड में कन्धे पर बेग था, जिनमें से कुछ बुक्स ओर फ़ाइल्स झांक रही थीं, उसे भी शायद कहीं जाना था,वो भी इंतज़ार कर रही थी।

₹कितनी बार ऐसा होता है न, टैक्सी के चक्कर में घंटा निकल जाता है,₹ उसने हँसते हुए कहा। वह मुस्कुराई, ₹हाँ, और तब छोटी-छोटी बातें ही सहारा बन जाती हैं। आप रोज़ कहाँ जाते हैं?₹ बातें बढ़ीं, ऑफ़िस की थकान, शहर की भागदौड़, चाय की चुस्कियों पर ज़िंदगी के फ़लसफ़े। अगले दिन फ़िर वही स्टैंड। इस बार उसने चाय का गिलास थमा दिया। ₹पी लो, इंतज़ार आसान हो जाएगा।₹ वह मुस्कुराई ,हँसी, ऐसे ही लम्हे जुड़े। जुड़ते चले गए और दोनों तरफ दिलों के दरवाज़े खुलते चले गए,कभी टैक्सी में साथ बैठना, कभी बारिश में भीगना। लगाव बढ़ा बेचैनियां बढ़ीं,बिना नाम लिए , खामोशी के साथ। वक्त की पाबंदियां भी दिखने लगीं ,इंतेज़ार में सरला भी ओर अमित की निगाहें भी,बेचैन से इधर उधर देखती को च तलाश करती रहतीं,अपना-पन, जैसे सालों पुरानी दोस्ती हो।

उसके नाम सरला था। नाम पूछा तो बोली, ₹बस सरला ही कह लो।₹ वह राज़ रखता रहा अमित। चैट्स शुरू हुईं रातों में। ₹कल मिलते हैं?₹ ₹हाँ, स्टैंड पर।₹ कई दिनों तक मिलना होता रहा आना जाना, लेकिन एक दिन, टैक्सी आ गई, वह चढ़ गई, दूसरी तरफ़ और बस... चली गई। कोई इशारा नहीं, कोई नज़र नहीं। अमित स्टैंड पर खड़ा रहा, सोचा शायद कल।

कल आया, पर सरला नहीं आई। चैट का कोई जवाब नहीं। फ़ोन की घंटी बजने का इंतज़ार। दिन बीते, हफ़्ते। अमित रोज़ स्टैंड जाता, चाय पीता, इंतज़ार करता। शहर की भागदौड़ में उसका दिल अटका रह गया। कभी लगता, शायद बिज़ी है। शायद कोई उलझन। लेकिन ख़ामोशी गहरी होती गई। कोई झगड़ा नहीं, कोई शिकायत नहीं। बस, सरला ,सरला और सरला का इंतेज़ार,

एक शाम, पुरानी चैट्स स्क्रॉल करते हुए आँसू आ गए। आख़िरी मैसेज उसका था,₹कल मिलते हैं।₹ कोई कल न आया। अमित ने क़लम उठाई, एक ख़त लिखा। बिना पते का।

सुनो न सरला

आज फ़िर स्टैंड गया था। तुम्हारी चाय का गिलास खाली था। तुम्हारी हँसी का इंतज़ार अब आदत बन गया है। तुम बिना अलविदा कहे चली गईं, पर मेरे सफ़र के पन्ने अधूरे हैं। कौन सा लम्हा था जब तुमने रास्ता बदल लिया? और क्यों क्या ख़ता हो गई मुझसे, बता तो देतीं तुम, मैं आज भी सोचता हूं,क्या वो टैक्सी वाला दिन आख़िरी था? हर टैक्सी में तुम्हारा चेहरा ढूंढता फिरता हूँ, वज़न काफ़ी कम हो गया है,

लोग कहते हैं जुदाई में हौसला चाहिए। तुम्हें तो था, मुझे इंतज़ार की आदत। खुश रहना, जहाँ भी हो। क्योंकि तुमने अलविदा न कहा, इसलिए मेरे दिल में तुम आज भी हो।

सिर्फ़ तुम्हारा, वादा करता हूं खुद से क़सम खाता हूं, ।एरी ज़िंदगी का इंतेज़ार तुम थीं और तुम ही रहेगी, सारी ज़िंदगी इंतेज़ार में ही गुज़रेगी चाहे किसी तरह भी गुज़रे ,

उफ़ मेरे मालिक ये इंतज़ार क्या कभी न ख़त्म होगा,अमित ने

ख़त मोड़ा, जेब में रखा। भेजा नहीं। शहर की रातें अब ख़ामोश थीं। स्टैंड पर अब भी जाता है अमित, चाय पीता है। खामोश सा उसकी निगाहे एक जगह नहीं ठहरती ढूंढती रहती हैं सरला को,शायद कभी लौट आए। या शायद ये कहानी ऐसे ही अधूरी रहे। बिना अलविदा के।

कल आया और कई कल भी आए, मगर उदास से, पर सरला नज़र नहीं। आज तक चैट का कोई जवाब नहीं। फ़ोन की घंटी बजने का इंतज़ार। दिन बीते, और साल बन गए, अमित ने नौकरी बदली, बी. एड. कॉलेज में लेक्चरर बन गया। सरला का चेहरा यादों में रह गया। स्टैंड अब भी जाता कभी-कभी, लेकिन अब अपनी कार से। इंतज़ार की आदत बनी रही।

चार साल बाद, एक शाम कॉलेज के कॉरिडोर में। अमित क्लास से निकला तो सामने सरला अब इसी कॉलेज में नई लेक्चरर,साथी लोगों ने बताया था कोई नई टीचर आने वाली है, । आँखें मिलीं, दुनिया रुक गई। ₹सरला?₹ ₹अमित... तुम?₹ हँसी फूटी मुस्कुराहटें जागीं, पुरानी यादें उमड़ आईं। पता चला, उसने बताया वो भी , बी. एड ही कर रही थी, घर की ज़िम्मेदारियाँ आईं तो चली गई बिना बताए। ₹माफ़ी माँगती हूँ, डर लगता था कहने से।₹ वक्त नहीं था बच्चों की ट्यूशन,अमित मुस्कुराया, ₹इंतज़ार मेरा था था कि नहीं, उसने चेहरा झुकाया फिर अमित की तरफ़ देखा शरारत से देखा,अब जुदाई नहीं थी। दोनों की नौकरी एक ही कॉलेज में। टैक्सी की यादें हँसी में बदल गईं। दोनों की मुहब्बत शादी के इक़रार में बदली , कुछ दिनों बाद वो जीवन साथ बन गए थे। उनकी अपनी कार है, उनका अपना छोटा सा घर है। शामें हैं घर की खुली छत पर। खुला आसमान ऊपर, चाँद मुस्कुराता हुआ। सरला चाय बनाती, अमित पुरानी चैट्स दिखाता। सपने पूरे हो रहे थे,शादी के बाद, भविष्य के प्लान। चाँदनी रातें खुशनुमा, हवा में उनके हँसने की आवाज़।

शाम छत पर, चाँदनी बरस रही थी। "अब अलविदा नहीं, अमित। ये सफ़र हमारा है।"

संत रामपाल जी का अन्नपूर्णा अभियान जरूरतमंद परिवारों के लिए बना उम्मीद की किरण

परिवहन विशेष न्यूज

गांव मेहतपुर की दिव्यांग विधवा के लिए नया घर बनाया

संगरूर, 26 मार्च (जगसीर सिंह)-

संत रामपाल जी महाराज का चलाया अन्नपूर्णा अभियान जरूरतमंद परिवारों के लिए उम्मीद की किरण बन गया है। इस अभियान के तहत जालंधर जिले की तहसील नकोदर के गांव मेहतपुर में रहने वाली 37 साल की दिव्यांग विधवा रेखा को बहुत सहारा मिला है। उनके परिवार में सिर्फ एक 7 साल का बेटा लवप्रीत है। रेखा की सेहत इतनी नाजुक है कि उनका एक पैर और एक हाथ बिल्कुल काम नहीं करता, जिसकी वजह से वह कोई भी मेहनत का काम नहीं कर पातीं। पैसे की तंगी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके पास न तो अपनी जमीन है, न मवेशी, न ही कोई बैंक अकाउंट या सेविंग्स है। उन्हें सरकारी स्कीमों का भी कोई फायदा नहीं मिल रहा है, क्योंकि उनका आधार कार्ड भी नहीं बन पाया। इस वजह से वह कभी किसी के घर से भीख मांगकर तो कभी किसी की मदद से अपना और अपने बच्चे का पेट पाल रही थी। उसका घर भी बहुत खराब हालत में था, टीन की छत वाला एक छोटा सा कमरा था, जो खराब हो गया था और बारिश या तूफान के दौरान बड़ा खतरा बन जाता था। इस दुखद स्थिति में, संत रामपाल जी महाराज द्वारा चलाया जा रहा अन्नपूर्णा अभियान उस परिवार के लिए वरदान साबित हुआ। पिछले 5 महीनों से लगातार हर महीने रेखा के परिवार को राशन और ज़रूरी सामान दिया जा रहा है, जिससे उनके जीवन में एक नई उम्मीद जगी है। इसके अलावा, संत रामपाल जी महाराज की प्रेरणा से इस गरीब परिवार के लिए एक नया पक्का घर भी तैयार किया जा रहा है। फिलहाल, इस घर का कंस्ट्रक्शन का काम चल रहा है, जो आने वाले दिनों में रेखा और उसके बेटे के लिए एक सुरक्षित और आरामदायक ज़िंदगी का सहारा बनेगा। संत रामपाल जी महाराज द्वारा चलाए जा रहे ये समाज सेवा के काम सिर्फ़ मदद तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये इंसानियत की सेवा का एक बड़ा उदाहरण पेश कर रहे हैं। अन्नपूर्णा कैंपेन के ज़रिए हज़ारों ज़रूरतमंद परिवारों को राशन और ज़रूरी मदद दी जा रही है, जिससे गरीब और लाचार लोगों को ज़िंदगी जीने की नई राह मिल रही है। आस-पास के लोगों ने भी इस पहल की तारीफ़ की है और कहा है कि समाज में अच्छे बदलाव लाने के लिए ऐसे सेवा के काम बहुत ज़रूरी हैं। संत रामपाल जी महाराज की ये कोशिशें साबित करती हैं कि अगर इरादा सच्चा हो, तो इंसानियत की सेवा से कई लोगों की ज़िंदगी बदली जा सकती है।

नकल का युग

● डॉ. विजय गर्ग

हम उस युग में रह रहे हैं जिसे विशेषज्ञ तेजी से प्रतिरूपण का युग कह रहे हैं। यह वह समय है जब प्रौद्योगिकी ने न केवल सूचना की नकल करना, बल्कि लोगों की स्वयं प्रतिलिपि बनाना भी संभव बना दिया है। अब चेहरों, आवाजों और यहां तक कि व्यक्तित्वों को भी आश्चर्यजनक सटीकता के साथ डिजिटल रूप से पुनः निर्मित किया जा सकता है, जिससे वास्तविकता और भ्रम के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है।

इस परिवर्तन के केंद्र में डीपफेक प्रौद्योगिकी का तेजी से उदय है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित, डीपफेक यथार्थवादी वीडियो, ऑडियो क्लिप और छवियां उत्पन्न कर सकता है, जिनमें लोग उन चीजों को कहते या करते हैं जो उन्होंने वास्तव में कभी नहीं की थीं। एक समय में उन्नत कौशल और महंगे उपकरणों की आवश्यकता थी, लेकिन अब इसे शीघ्रता और सस्ते दामों पर बनाया जा सकता है, जिससे नकल करना पहले से कहीं अधिक सुलभ हो गया है।

यह बदलाव डिजिटल दुनिया में पहचान के कार्य करने के तरीके में एक मौलिक परिवर्तन का संकेत है। परंपरागत रूप से, किसी व्यक्ति का चेहरा और आवाज प्रामाणिकता के विश्वसनीय संकेतक थे। आज, उन मार्करों को डिजिटल डेटा के रूप में दोहराया जा सकता है। जैसा कि शोधकर्ताओं ने बताया, डीपफेक व्यक्तियों के आभासी प्रतिनिधित्व का निर्माण करता है, जिससे पहचान की चोरी और कुछ विद्वानों द्वारा ₹डिजिटल व्यक्तित्व साहित्यिक चोरी₹ कहे जाने वाले विषय पर गंभीर चिंताएं उत्पन्न होती हैं

इस नये युग के परिणाम दूरगामी हैं। राजनीति में, डीपफेक गलत सूचना फैला सकता है और जनमत को प्रभावित कर सकता है। व्यवसाय में, अपराधी एआई-जनित आवाजों और वीडियो का उपयोग अधिकारियों की नकल करने के लिए करते हैं, जिससे वित्तीय धोखाधड़ी होती है। व्यक्तिगत जीवन में, घोटालेबाज प्रियजनों की नकल कर सकते हैं, जिससे भावनात्मक परेशानी और वित्तीय नुकसान हो सकता है। रिपोर्टों से पता चलता है कि एआई-संचालित नकल घोटालों में नाटकीय वृद्धि हुई है, तथा विश्वास को अपना प्राथमिक हथियार बना लिया गया है।

अपराध के अलावा, नकल का युग एक गहन सामाजिक आधार को भी चुनौती देता हैः विश्वास। ऐसी दुनिया में जहां कोई भी छवि या वीडियो बनाया जा सकता है, लोग जो कुछ भी देखते और सुनते हैं उस पर सवाल उठाने लगते हैं। इससे कुछ विशेषज्ञों को डर है कि यह एक 'सत्य के बाद का वातावरण' बन सकता है, जहां तथ्यों को कल्पना से अलग करना तेजी से कठिन हो जाता है।

फिर भी, यह तकनीक पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है। डीपफेक का रचनात्मक और शैक्षिक उपयोग भी है। फिल्म निर्माण और मनोरंजन से लेकर आभासी शिक्षण वातावरण तक। हालाँकि, नैतिक दुविधा इस बात में निहित है कि इन उपकरणों का कितनी आसानी से दुरुपयोग किया जा सकता है। वही तकनीक जो मनोरंजन करती है, वह धोखा भी दे सकती है।

इस युग में आगे बढ़ने के लिए समाज को अनुकूलन करना होगा। मजबूत कानून, बेहतर पहचान प्रौद्योगिकियां और डिजिटल साक्षरता आवश्यक हैं। व्यक्तियों को सूचना का सत्यापन करना, संदिग्ध सामग्री पर सवाल उठाना और डिजिटल बातचीत में सतर्क रहना सीखना चाहिए। सरकारों और तकनीकी कंपनियों को ऐसी प्रणालियां बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जो पहचान की रक्षा करें और जवाबदेही सुनिश्चित करें।

निष्कर्षतः, नकल का युग एक तकनीकी सफलता और एक सामाजिक चुनौती दोनों है। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास होता जाएगा, वास्तविकता की नकल करने की क्षमता और भी मजबूत होती जाएगी। मानवता के लिए असली परीक्षा यह नहीं है कि क्या हम ऐसे शक्तिशाली उपकरण बना सकते हैं, बल्कि यह है कि क्या आप डिजिटल दुनिया में सत्य, विश्वास और मानवीय पहचान को संरक्षित करते हुए उनका जिम्मेदारी से उपयोग कर सकते हैं। डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

खेल व खिलाड़ियों में भाव परिवर्तन

डॉ विजय गर्ग

खेल केवल शारीरिक गतिविधि नहीं, बल्कि मानसिकता, भावनाओं और व्यक्तित्व के विकास का भी सशक्त माध्यम है। समय के साथ खेलों और खिलाड़ियों के दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन आया है। पहले जहाँ खेलों को मनोरंजन और स्वास्थ्य तक सीमित माना जाता था, वहीं आज यह पेशा, पहचान और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बन चुका है।

पारंपरिक भावनाएँ और खेल भावना

पुराने समय में खेलों का मुख्य उद्देश्य आनंद, टीम भावना और शारीरिक फिटनेस था। खिलाड़ी खेल को एक शौक के रूप में अपनाते थे और "खेल भावना" सर्वोपरि होती थी। जीत-हार को समान भाव से स्वीकार करना, विरोधी का सम्मान करना और नियमों का पालन करना खेल की मूल भावना मानी जाती थी।

आधुनिक युग में बदलाव

आज खेलों का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है। व्यावसायिकता, मीडिया और तकनीक के प्रभाव से खेल एक बड़े उद्योग में बदल चुके हैं। ओलंपिक खेल, इंडियन प्रीमियर लीग जैसे आयोजनों ने खिलाड़ियों को वैश्विक पहचान दी है। अब खिलाड़ी केवल खेल नहीं खेलते, बल्कि ब्रांड एंबेसडर, प्रेरणा स्रोत और आर्थिक शक्ति भी बन गए हैं।

भावनात्मक परिवर्तन

इस बदलाव के साथ खिलाड़ियों की भावनाओं में भी परिवर्तन आया है। पहले जहाँ संतोष और सादगी प्रमुख थी, वहीं अब प्रतिस्पर्धा, दबाव और सफलता की तीव्र इच्छा बढ़ गई है। आज का खिलाड़ी मानसिक रूप से अधिक सशक्त होना चाहता है, क्योंकि उसे न केवल मैदान में बल्कि सोशल मीडिया और जन अपेक्षाओं के दबाव का भी सामना करना पड़ता है।

प्रेरणादायक उदाहरण

सचिन तेंदुलकर ने अपने अनुशासन और विनम्रता से खेल भावना का आदर्श प्रस्तुत किया, जबकि नीरज चोपड़ा ने आधुनिक युग में समर्पण और आत्मविश्वास का नया उदाहरण स्थापित किया। इन खिलाड़ियों ने दिखाया कि बदलते समय में भी मूल भावनाओं को बनाए रखना संभव है।

सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

इस परिवर्तन के कई सकारात्मक पहलू हैं—खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएँ, पहचान और आर्थिक सुरक्षा मिल रही है। लेकिन इसके साथ ही तनाव, प्रतिस्पर्धा और कभी-कभी अनैतिक

व्यवहार (जैसे डोपिंग) की घटनाएँ भी सामने आती हैं। इससे खेल की मूल भावना को चुनौती मिलती है।

संतुलन की आवश्यकता

आज सबसे बड़ी आवश्यकता है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखा जाए। खिलाड़ियों को तकनीक और अवसरों का लाभ उठाते हुए भी खेल भावना, नैतिकता और अनुशासन को नहीं भूलना चाहिए।

निष्कर्ष

खेल और खिलाड़ियों में भाव परिवर्तन समय की मांग है, लेकिन यह परिवर्तन सकारात्मक दिशा में होना चाहिए। यदि खिलाड़ी अपने मूल मूल्यों को बनाए रखते हुए आगे बढ़ें, तो खेल न केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम रहेगा, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा और एकता का स्रोत भी बना रहेगा।

ईरान–इज़राइल–अमेरिका टकराव और तीसरे विश्व युद्ध का खतरा

अशोक कुमार झा

इतिहास कभी अचानक नहीं बदलता—वह धीरे-धीरे अपने संकेत देता है। आज जब दुनिया के सबसे संवेदनशील क्षेत्र मध्य पूर्व से युद्ध की खबरें लगातार सामने आ रही हैं, तो यह सवाल स्वाभाविक है कि क्या हम एक बार फिर उसी दिशा में बढ़ रहे हैं, जहाँ से लौटना संभव नहीं होता?

ईरान, इज़राइल और अमेरिका के बीच बढ़ता तनाव अब केवल राजनीतिक या क्षेत्रीय मुद्दा नहीं रह गया है। यह संघर्ष अब वैश्विक स्थिरता, आर्थिक संतुलन और मानवता के भविष्य के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है।

संघर्ष की जड़ें: अविश्वास, शक्ति और अस्तित्व की लड़ाई

इस टकराव की जड़ें दशकों पुरानी हैं। ईरान और अमेरिका के संबंध 1979 की क्रांति के बाद से ही तनावपूर्ण रहे हैं, जबकि इज़राइल और ईरान के बीच वैचारिक विरोध किसी से छिपा नहीं है।

ईरान खुद को एक उभरती हुई क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहता है, वहीं इज़राइल अपनी सुरक्षा और अस्तित्व को लेकर बेहद सतर्क है। अमेरिका इस पूरे समीकरण में एक ऐसी ताकत है, जो संतुलन बनाने के साथ-साथ अपने हितों की रक्षा भी करता है।

यह संघर्ष केवल सीमाओं का नहीं, बल्कि विचारधाराओं, विश्वास और प्रभुत्व का भी है।

वर्तमान हालात: युद्ध अब दरवाजे पर दस्तक दे रहा है

हाल के दिनों में जिस तेजी से घटनाएं घटी हैं, उसने पूरी दुनिया को चिंतित कर दिया है।

मिसाइल हमले, ड्रोन स्ट्राइक, साइबर अटैक और सामरिक ठिकानों पर हमले—यह सब इस बात के संकेत हैं कि स्थिति अब नियंत्रण से बाहर हो सकती है।

मध्य पूर्व अब केवल राजनीतिक चर्चा का विषय नहीं, बल्कि एक संभावित युद्ध का मैदान बन चुका है।

तीसरे विश्व युद्ध की आशंका: डर कितना वास्तविक?

"तीसरा विश्व युद्ध"—यह शब्द सुनते ही मन में भय पैदा होता है, लेकिन आज यह केवल कल्पना नहीं रह गया है।

यदि यह संघर्ष और बढ़ता है और अन्य महाशक्तियाँ इसमें शामिल होती हैं, तो यह स्थिति वैश्विक युद्ध में बदल सकती है।

सबसे बड़ी चिंता यह है कि आज के दौर में युद्ध केवल पारंपरिक हथियारों तक सीमित नहीं है—परमाणु हथियारों का खतरा इसे और भी भयावह बना देता है।

परमाणु खतरा: मानवता के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न

दुनिया आज उस युग में है जहाँ एक निर्णय पूरी सभ्यता को समाप्त कर सकता है।

इज़राइल को परमाणु शक्ति माना जाता है और ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर लगातार संदेह बना हुआ है।

यदि यह संघर्ष परमाणु स्तर तक पहुँचता है, तो यह केवल एक युद्ध नहीं रहेगा—यह मानवता के अस्तित्व का संकट बन जाएगा।

आर्थिक प्रभाव: युद्ध की मार आम आदमी पर

किसी भी युद्ध का सबसे बड़ा असर आम जनता पर पड़ता है। तेल की कीमतों में वृद्धि, महंगाई, व्यापार में गिरावट—ये सब इसके प्रत्यक्ष परिणाम हैं। भारत जैसे देशों के लिए यह स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि हमारी ऊर्जा जरूरतें काफी हद तक मध्य पूर्व पर निर्भर हैं।

भारत की स्थिति: संतुलन की परीक्षा

भारत इस पूरे संकट में एक महत्वपूर्ण लेकिन जटिल भूमिका में है। एक ओर अमेरिका और इज़राइल के साथ मजबूत संबंध हैं, तो दूसरी ओर ईरान के साथ भी हमारे ऐतिहासिक रिश्ते हैं।

भारत को इस स्थिति में संतुलित कूटनीति अपनानी होगी—ताकि राष्ट्रीय हित भी सुरक्षित रहें और वैश्विक शांति में योगदान भी दिया जा सके।

क्या युद्ध टल सकता है? उम्मीद अभी बाकी है

इतिहास यह बताता है कि हर युद्ध का अंत बातचीत से ही होता है। आज भी यदि कूटनीतिक प्रयासों को प्राथमिकता दी जाए, तो इस संकट को टाला जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी और विश्व समुदाय को एकजुट होकर शांति का रास्ता अपनाना होगा।

मानवता बनाम राजनीति: असली सवाल

इस पूरे संघर्ष में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह युद्ध केवल देशों के बीच है, या यह मानवता के खिलाफ है? क्योंकि हर बम के गिरने के साथ केवल एक इमारत नहीं टूटती, बल्कि एक परिवार, एक सपना और एक भविष्य भी खत्म हो जाता है।

भविष्य: तीन संभावित रास्ते

- शांति और समझौता: कूटनीति सफल होती है
- लंबा संघर्ष: क्षेत्रीय अस्थिरता बनी रहती है
- वैश्विक युद्ध: तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो जाता है

फैसला हमारे समय के हाथ में है

आज दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ से आगे का रास्ता हमारे निर्णय तय करेंगे। या तो हम संवाद, शांति और सहयोग का रास्ता चुनें, या फिर युद्ध और विनाश की ओर बढ़ जाएं। ईरान, इज़राइल और अमेरिका का यह संघर्ष केवल तीन देशों का नहीं, बल्कि पूरी मानवता के भविष्य का सवाल है।

"अगर अब भी दुनिया नहीं संभली, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेंगी—क्योंकि हमने युद्ध को रोका नहीं, बल्कि उसे बढ़ने दिया।"

एआई और चुनावी अभियान: लोकतंत्र के लिए अवसर या खतरा?

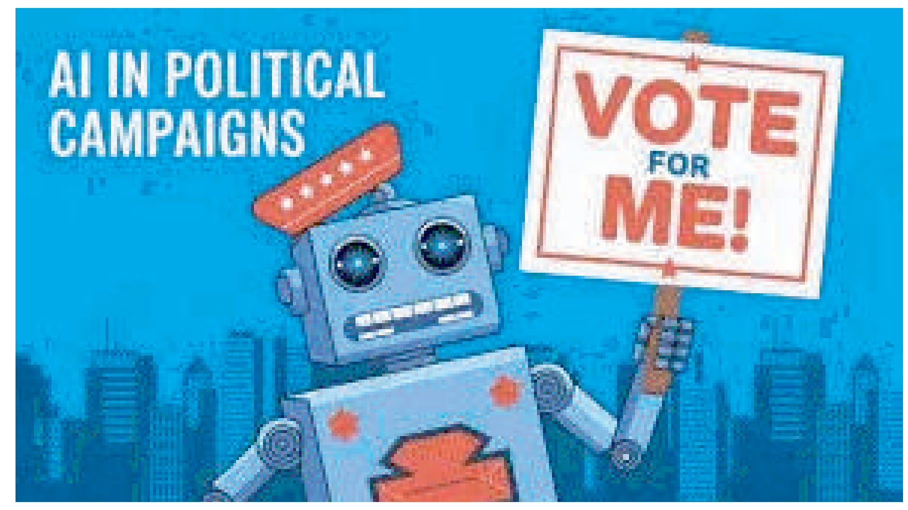

यदि इस विषय को प्रमाणिक और समकालीन तथ्यों के आधार पर समझें, तो स्पष्ट होता है कि एआई चुनावी प्रक्रिया में दोहरे प्रभाव के साथ उपस्थित है—एक ओर यह संवाद को सरल, सुलभ और व्यापक बना रहा है, वहीं दूसरी ओर यह भ्रम, भ्रामकता और मनोवैज्ञानिक हेरफेर का माध्यम भी बन रहा है। वर्ष 2025-26 के वैश्विक चुनावी परिदृश्य के विश्लेषण में यह पाया गया कि विभिन्न देशों—जैसे बांग्लादेश, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और ताइवान—में एआई का उपयोग मतदाताओं को भ्रमित करने, उम्मीदवारों की छवि बिगाड़ने और कृत्रिम प्रचार सामग्री तैयार करने के लिए किया गया।

डॉ. शैलेश शुक्ला

समय की संवेदनशील सरिता में जब संवाद, सूचना और संप्रेषण की शक्ति नई तकनीकों के साथ संलग्न होती है, तब लोकतंत्र की दिशा और दशा दोनों प्रभावित होती हैं। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रवेश चुनावी अभियानों में उसी प्रकार हुआ है, जैसे कभी रेडियो, फिर टेलीविजन और उसके बाद सोशल मीडिया ने राजनीतिक संचार को परिवर्तित किया था किंतु इस बार परिवर्तन केवल माध्यम का नहीं बल्कि मनोविज्ञान, मतनिर्माण और मतदाताओं के विश्वास का भी है। यही कारण है कि यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो गया है कि क्या एआई चुनावी अभियानों में लोकतंत्र को सशक्त कर रहा है या उसे संकट की ओर ले जा रहा है।

यदि इस विषय को प्रमाणिक और समकालीन तथ्यों के आधार पर समझें, तो स्पष्ट होता है कि एआई चुनावी प्रक्रिया में दोहरे प्रभाव के साथ उपस्थित है—एक ओर यह संवाद को सरल, सुलभ और व्यापक बना रहा है, वहीं दूसरी ओर यह भ्रम, भ्रामकता और मनोवैज्ञानिक हेरफेर का माध्यम भी बन रहा है। वर्ष 2025-26 के वैश्विक चुनावी परिदृश्य के विश्लेषण में यह पाया गया कि विभिन्न देशों—जैसे बांग्लादेश, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और ताइवान—में एआई का उपयोग मतदाताओं को भ्रमित करने, उम्मीदवारों की छवि बिगाड़ने और कृत्रिम प्रचार सामग्री तैयार करने के लिए किया गया। यह तथ्य इस बात का स्पष्ट संकेत है कि एआई अब चुनावी रणनीति का सक्रिय उपकरण बन चुका है।

एआई का पहला और सकारात्मक पक्ष है "संचार का सशक्तिकरण"। आज राजनीतिक दल एआई के माध्यम से मतदाताओं तक अधिक सटीक और व्यक्तिगत संदेश पहुँचा पा रहे हैं। जनरेटिव एआई के उपयोग से भाषण, घोषणापत्र, वीडियो और डिजिटल सामग्री तेजी से तैयार की जा रही है, जिससे छोटे दलों और सीमित संसाधनों वाले उम्मीदवारों को भी प्रतिस्पर्धा में अवसर मिल रहा है। फ्रांस के स्थानीय चुनावों 2026 में यह देखा गया कि एआई ने छोटे उम्मीदवारों को भी प्रभावी प्रचार करने का अवसर दिया, जिससे लोकतंत्र में भागीदारी का दायरा बढ़ा। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए एक सकारात्मक संकेत है, क्योंकि यह राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को अधिक समावेशी बनाती है।

इसके अतिरिक्त, एआई डेटा विश्लेषण के माध्यम से मतदाताओं की प्राथमिकताओं को समझने में भी सहायता करता है। इससे नीति निर्माण अधिक लक्षित और प्रभावी हो सकता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न शोधों में यह बताया गया है कि एआई आधारित विश्लेषण चुनावी रणनीति को अधिक वैज्ञानिक और डेटा-आधारित बनाता है, जिससे राजनीतिक दल जनता की वास्तविक समस्याओं को समझने में सक्षम होते हैं। यह लोकतंत्र की गुणवत्ता को सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

परंतु जहाँ अवसर हैं, वहीं खतरे भी अत्यंत गहरे हैं। एआई का सबसे गंभीर खतरा है "भ्रामक सूचना और दुष्प्रचार का प्रसार"। विश्व आर्थिक मंच और यूनेस्को जैसे संस्थानों ने यह चेतावनी दी है कि एआई द्वारा निर्मित सिंथेटिक मीडिया ने सत्य और असत्य के बीच की रेखा को धुंधला कर दिया है। वर्ष 2023 में लगभग 5 लाख डीपफेक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हुए, और 2025 तक इनके 80 लाख तक पहुँचने का अनुमान व्यक्त किया गया। यह वृद्धि केवल संख्या में नहीं, बल्कि प्रभाव में भी दिखाई दे रही है।

चुनावी संदर्भ में यह खतरा और अधिक गंभीर हो जाता है। बांग्लादेश के 2026 के आम चुनावों से पहले चुनाव आयोग ने लगभग 86,000 एआई-जनित भ्रामक सामग्री के मामलों की पहचान की, जिनमें हजारों सामग्री हिंसक और भड़काऊ थी। यह उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि एआई आधारित दुष्प्रचार लोकतंत्र की स्थिरता को सीधे प्रभावित कर सकता है।

डीपफेक तकनीक इस खतरे का सबसे तीव्र रूप है। एआई द्वारा तैयार नकली वीडियो और ऑडियो मतदाताओं को भ्रमित कर सकते हैं और उम्मीदवारों की छवि को नुकसान पहुँचा सकते हैं। अनेक विश्लेषणों में यह पाया गया है कि डीपफेक सामग्री इतनी यथार्थवादी होती है कि आम नागरिक के लिए उसे पहचानना कठिन होता है। इससे मतदाताओं की निर्णय क्षमता प्रभावित होती है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की विश्वसनीयता कमजोर पड़ती है।

इसके साथ ही "लक्षित मनोवैज्ञानिक हेरफेर" का खतरा भी बढ़ गया है। एआई के माध्यम से मतदाताओं के व्यवहार, पसंद और भावनाओं का विश्लेषण करके उन्हें विशेष प्रकार के संदेश भेजे जाते हैं। यह प्रक्रिया मतदाताओं की स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि वे अनजाने में ऐसे प्रभावों के अधीन हो जाते हैं, जो उनकी सोच को दिशा देते हैं। इस प्रकार एआई लोकतंत्र में "स्वतंत्र निर्णय" की अवधारणा को चुनौती देता है।

भारत के संदर्भ में यह चुनौती और भी जटिल हो जाती है। देश में 800 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता और 400 मिलियन से अधिक व्हाट्सएप उपयोगकर्ता हैं, जैसा कि अंतरराष्ट्रीय विश्लेषणों में उल्लेख किया गया है। इतनी विशाल डिजिटल आबादी में यदि एआई आधारित दुष्प्रचार फैलता है, तो उसका प्रभाव व्यापक और तीव्र हो सकता है। इसी कारण भारत में चुनाव आयोग और सरकार ने एआई के दुरुपयोग को रोकने के लिए कई दिशानिर्देश जारी किए हैं, जिनमें चुनाव के दौरान डीपफेक सामग्री को 3 घंटे के भीतर हटाने का निर्देश शामिल है।

वैश्विक स्तर पर भी यह चिंता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 75 प्रतिशत से अधिक लोग मानते हैं कि एआई चुनाव परिणामों को प्रभावित कर सकता है। यह विश्वास ही लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है, क्योंकि लोकतंत्र केवल प्रक्रिया नहीं, बल्कि विश्वास की व्यवस्था भी है।

साइबर युद्ध और विदेशी हस्तक्षेप के संदर्भ में भी एआई का उपयोग बढ़ रहा है। मोल्दोवा के चुनावों में एआई आधारित दुष्प्रचार अभियानों का उपयोग विदेशी प्रभाव के लिए किया गया, जहाँ हजारों फर्जी अकाउंट और चैनल बनाकर मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास किया गया। यह उदाहरण दर्शाता है कि एआई केवल आंतरिक राजनीति ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय शक्ति संघर्ष का भी उपकरण बन सकता है।

फिर भी, यह कहना उचित नहीं होगा कि एआई केवल खतरा है। यह लोकतंत्र के लिए अवसर भी प्रस्तुत करता है। यदि इसका उपयोग पारदर्शिता, सूचना की उपलब्धता और मतदाता शिक्षा के लिए किया जाए, तो यह लोकतंत्र को सशक्त बना सकता है। उदाहरण के लिए, एआई आधारित चैटबॉट्स मतदाताओं को चुनाव प्रक्रिया, उम्मीदवारों और नीतियों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं, जिससे उनकी जागरूकता बढ़ सकती है।

समस्या का मूल प्रश्न "प्रयोग" नहीं, बल्कि "दुरुपयोग" है। एआई एक तटस्थ तकनीक है, जिसका प्रभाव उसके उपयोग पर निर्भर करता है। यदि इसे नैतिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ उपयोग किया जाए, तो यह लोकतंत्र के लिए वरदान बन सकता है; अन्यथा यह भ्रम, विभाजन और अविश्वास का कारण बन सकता है।

इस संदर्भ में समाधान भी बहुआयामी होना चाहिए। सबसे पहले, सशक्त और स्पष्ट नियामक ढाँचा आवश्यक है, जो एआई आधारित दुष्प्रचार और डीपफेक पर नियंत्रण स्थापित करे। दूसरा, तकनीकी स्तर पर ऐसे उपकरण विकसित किए जाने चाहिए, जो कृत्रिम सामग्री की पहचान कर सकें। तीसरा, समाज में डिजिटल साक्षरता और जागरूकता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि नागरिक स्वयं भ्रामक सामग्री को पहचान सकें।

अंततः यह कहा जा सकता है कि एआई चुनावी अभियानों में एक "द्विधारी तलवार" के समान है। यह लोकतंत्र को सशक्त भी कर सकता है और उसे कमजोर भी। यह अवसर भी है और खतरा भी। इसका भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम इसे किस दिशा में ले जाते हैं—नैतिकता के साथ या बिना नैतिकता के। समय की सशक्त सीख यही है कि लोकतंत्र केवल तकनीक से नहीं, बल्कि विश्वास, विवेक और मूल्य से चलता है। यदि एआई इन मूल्यों के साथ समन्वय स्थापित कर सके, तो यह लोकतंत्र के उत्कर्ष का माध्यम बनेगा; अन्यथा यह उसके लिए एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

महिला सशक्तिकरण की सशक्त मिसाल थी दादी जानकी= राजयोगिनी पूनम दीदी

नारी शक्ति की प्रेरणा : दादी जानकी का अद्भुत जीवन

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : आध्यात्मिक चेतना, सेवा और नारी सशक्तिकरण की सशक्त प्रतीक रहीं दादी जानकी को आज भी दुनिया भर में श्रद्धा और प्रेरणा के साथ याद किया जाता है। प्रजा पिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रमुख स्तंभ रहीं दादी जानकी का जीवन एक ऐसी प्रेरक गाथा है, जिसने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में आध्यात्मिक जागरण की नई रोशनी फैलाई।

चंडीगढ़ के सेक्टर-27 स्थित ग्लोबल डिवाइन लाइट हाउस की राजयोगिनी पूनम दीदी उन्हें स्मरण करते हुए कहती हैं कि "दादी जानकी केवल एक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि एक जीवित ऊर्जा थीं, जो हर आत्मा को उसकी वास्तविक शक्ति का बोध कराती थीं।" उनके अनुसार दादी जी का जीवन इस बात का प्रमाण था कि सच्चा नेतृत्व बाहरी शक्ति से नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और आत्मबल से जन्म लेता है।

सिंध प्रांत (अब पाकिस्तान) में जन्मी दादी जानकी जी ने बचपन से ही सेवा और आध्यात्मिकता को अपना लक्ष्य बना लिया था। 1937 में जब उन्होंने ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़कर अपना जीवन समर्पित किया, तब यह निर्णय समाज की परंपराओं को चुनौती देने वाला था। पूनम दीदी कहती हैं, "उस दौर में महिलाओं के लिए इस प्रकार आगे बढ़ना आसान नहीं था, लेकिन दादी जी ने यह साबित किया कि दृढ़ संकल्प से हर बाधा को पार किया जा सकता है।"

1951 से 1974 के बीच उन्होंने भारत और विश्वभर में आध्यात्मिक मूल्यों का प्रचार किया। वे उस समय की एकमात्र महिला आध्यात्मिक वक्ता थीं, जिन्होंने पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों को जोड़ते हुए मानवता की एकता का संदेश दिया। 100 से अधिक देशों की यात्रा कर उन्होंने समाज के हर वर्ग तक आध्यात्मिकता का संदेश पहुँचाया। इस संदर्भ में पूनम दीदी कहती हैं, "दादी जी जहां भी गईं, वहां उन्होंने लोगों के दिलों को जोड़ा, न कि केवल विचारों को।"

1974 में लंदन में ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस की स्थापना उनके प्रयासों का ही परिणाम थी। इसके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को एक मंच पर लाकर सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में कार्य किया गया। आगे चलकर वे

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बनीं और विश्वभर में सेवाकार्यों की जिम्मेदारी संभाली। पूनम दीदी के शब्दों में, "दादी जानकी का नेतृत्व अनुशासन, करुणा और सादगी का अद्भुत संगम था।"

दादी जानकी जी ने शिक्षा और मूल्यों के विकास को विशेष महत्व दिया। 'लिविंग वैल्यूज एजुकेशनल इनिशिएटिव' के माध्यम से उन्होंने 60 से अधिक देशों में बच्चों को नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा से जोड़ा। यूनिसेफ से जुड़े शिक्षाविदों के सहयोग से शुरू हुई यह पहल आज एक वैश्विक आंदोलन बन चुकी है। पूनम दीदी कहती हैं, "दादी जी मानती थीं कि अगर बचपन में ही सही संस्कार मिल जाएं, तो समाज अपने आप बदल सकता है।"

1995 में बीजिंग में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के चौथे विश्व महिला सम्मेलन में उन्होंने प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इसके अलावा "Sharing Our Values for a Better World" जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने राजनीति, विज्ञान, शिक्षा और स्वास्थ्य में मूल्यों के समावेश का संदेश दिया। 'Young Women of Wisdom' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने युवा महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उनकी अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति भी अत्यंत प्रभावशाली रही। सैन फ्रांसिस्को में "State of the World Forum" में भागीदारी, सिंगापुर में 5000 लोगों के बीच 'Companion of God' के चीनी संस्करण का विमोचन, और यूके में 'Inter-Religious Understanding and Co-operation' कार्यक्रम की मेजबानी—ये सभी उनके वैश्विक प्रभाव को दर्शाते हैं। वे 'World Congress of Faith' की उपसभापति भी रहीं और ऑक्सफोर्ड के निकट ग्लोबल रिट्रीट सेंटर की स्थापना में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दादी जानकी जी का जीवन केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम भी था। उन्होंने महिलाओं में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास किया। पूनम दीदी कहती हैं, "दादी जी हर महिला को यह एहसास दिलाती थीं कि वह किसी से कम नहीं, बल्कि अपने भीतर असीम शक्तियों का भंडार रखती है।"

उनकी दृष्टि में सच्चा विकास वही है जिसमें मनुष्य का भावनात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान हो। उन्होंने पूरी दुनिया में प्रेम, शांति और सहयोग का संदेश फैलाया और यह सिखाया कि जीवन का असली उद्देश्य केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण के लिए जीना है।

आज भी जब दादी जानकी जी को याद किया जाता है, तो उनका जीवन एक प्रेरणा बनकर सामने आता है। पूनम दीदी के शब्दों में, "दादी जानकी जी ने हमें सिखाया कि अगर मन शांत और लक्ष्य स्पष्ट हो, तो असंभव भी संभव बन जाता है।"

उनकी यही शिक्षाएं आज भी लाखों लोगों के जीवन को दिशा दे रही हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

विश्व बौद्ध महासंघ के अध्यक्ष और पंजाब मानवाधिकार आयुक्त ने संघर्ष रोकथाम, समावेशन और मानवीय कार्यों पर संयुक्त पहलों पर चर्चा की

परिवहन विशेष न्यूज

चंडीगढ़। भारत में उच्च-स्तरीय वार्ता के बाद, वैश्विक धार्मिक और मानवाधिकार समुदायों के नेताओं ने शांति स्थापना और मानवीय गरिमा की रक्षा के क्षेत्र में सहयोग को और गहरा करने का संकल्प लिया है।

विश्व बौद्ध महासंघ के अध्यक्ष और विश्व शांति बचाव मिशन (संयुक्त राष्ट्र, USA) के प्रतिनिधि डॉ. परविंदर इंदर सिंह ने पंजाब राज्य मानवाधिकार आयोग के सम्मानित सदस्य पद्म श्री जितेंद्र सिंह शुंटी से मुलाकात की। इस दौरान वैश्विक शांति पहलों और मानवाधिकारों से जुड़ी चुनौतियों पर व्यापक चर्चा हुई।

बैठक के दौरान, दोनों नेताओं ने दुनिया भर में बढ़ते संघर्ष, सामाजिक ध्रुवीकरण और भेदभाव पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने करुणा, न्याय और सभी समुदायों के प्रति सम्मान पर आधारित सहयोगात्मक और अहिंसक प्रतिक्रियाओं की तत्काल आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

डॉ. सिंह ने इस बात पर बल दिया कि धार्मिक और अंतर-धार्मिक संगठन, जब संवैधानिक और वैधानिक मानवाधिकार निकायों के साथ मिलकर काम करते हैं, तो वे हिंसा को रोकने, नफ़रत फैलाने वाले भाषणों (हेट स्पीच) का मुकाबला करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्कों और क्षेत्रीय संस्थानों के बीच सुनियोजित साझेदारियों, संयुक्त वकालत और नियमित संवाद का आह्वान किया।

शुंटी ने इस पहल का स्वागत किया और मानवाधिकारों के सिद्धांतों को कमज़ोर वर्गों—जिनमें महिलाएं, बच्चे, अल्पसंख्यक और गरीबी या विस्थापन से प्रभावित लोग शामिल हैं—के लिए ठोस सुरक्षा उपायों में बदलने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्थानीय आयोगों और वैश्विक मंचों के बीच सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों (best practices) को साझा करने से 'शीघ्र चेतावनी तंत्र' और जवाबदेही को मज़बूती मिल सकती है।

दोनों पक्ष भविष्य में सहयोग की संभावनाओं को तलाशने पर सहमत हुए। इसमें शांति शिक्षा, संघर्ष समाधान और मानवीय कार्यों पर केंद्रित सम्मेलन, जागरूकता अभियान और क्षमता-निर्माण कार्यक्रम शामिल होंगे। बैठक का समापन सरकारों, नागरिक समाज और दुनिया भर के धार्मिक नेताओं से किए गए एक संयुक्त आह्वान के साथ हुआ, जिसमें उनसे मानवीय गरिमा को बनाए रखने और एक अधिक शांतिपूर्ण व न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था के निर्माण के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया गया। संयुक्त कार्यक्रमों और उनकी समय-सीमा के संबंध में विस्तृत जानकारी, भाग लेने वाले संगठनों के बीच होने वाली आगे की परामर्श बैठकों के बाद घोषित किए जाने की उम्मीद है।

पंडित हजारीलाल सदन में कल होगा 4 स्टार लाइब्रेरी का शुभारंभ

खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम होंगे मुख्य अतिथि, नगर परिषद अध्यक्ष रमेश बैटरीवाला करेंगे अध्यक्षता

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : क्षेत्र के विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत विराटनगर स्थित पंडित हजारीलाल सदन में अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित 4 स्टार लाइब्रेरी का भव्य उद्घाटन कल दोपहर 1:00 बजे किया जाएगा। इस अवसर पर हरियाणा के खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता बरवाला नगर परिषद के अध्यक्ष रमेश बैटरीवाला करेंगे। हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के पूर्व सदस्य एवं महर्षि दधीचि परमार्थ आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. हर्ष मोहन भारद्वाज कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करेंगे। डॉ हर्ष मोहन भारद्वाज ने बताया कि क्षेत्र में विद्यार्थियों की बढ़ती पढ़ाई की रुचि और गुणवत्तापूर्ण अध्ययन के लिए उपयुक्त माहौल की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस लाइब्रेरी की स्थापना की गई है।

डॉ. भारद्वाज ने कहा कि यह लाइब्रेरी विद्यार्थियों को शांत, अनुशासित और आधुनिक वातावरण प्रदान करेगी, जिससे वे अपनी पढ़ाई पर बेहतर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए यह लाइब्रेरी एक सशक्त मंच साबित होगी। उन्होंने बताया कि यह पहल क्षेत्र में शिक्षा के स्तर को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का कार्य करेगी। कार्यक्रम में क्षेत्र के गणमान्य लोग बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।

उत्तर प्रदेश सरकार के आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल से जायसवाल समाज के प्रतिनिधि मंडल की मुलाकात

संगठनात्मक, सामाजिक और व्यापारिक मुद्दों पर हुई चर्चा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार के आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल से जयसवाल समाज के प्रतिनिधि मंडल ने भेंट कर समाज से जुड़े संगठनात्मक, सामाजिक एवं व्यापारिक मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की।बैठक के दौरान समाज के प्रतिनिधियों ने विभिन्न जनहित विषयों पर अपने सुझाव रखे और समुदाय के सशक्तिकरण तथा युवाओं के लिए रोजगार व व्यापारिक अवसरों के विस्तार पर विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से भाजपा नेता सेलू जायसवाल, सदास्य नगर कार्य समिति भाजपा लखनऊ महानगर रवि प्रकाश जायसवाल, ऐशबाग व्यापार मंडल महामन्त्री अतुल पाल ,वैभव जायसवाल , नितिन जायसवाल, अर्पित जायसवाल, अवनीश जायसवाल, और सामाजिक कार्यकर्ता संतोष जायसवाल सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।मंत्री नितिन अग्रवाल ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि सरकार समाज के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है और समुदाय के सुझावों पर सकारात्मक कार्रवाई की जाएगी।

लोयावाद, धनबाद जिला के नव निर्वाचीत उप मेयर माननीय अरूण कुमार चौहान जी का दिनांक 29,मार्च,2026 समय दोपहर 12 बजे स्थान,बनियाहीर,हनुमानगढी,झरिया मे नागरीक अभिनन्दन समारोह को सफल बनाने के लिये झारखण्ड मुक्ती मोर्चा पार्टी के धनबाद नगर अध्यक्ष मण्टू चौहान जी के साथ पार्टी पदाधिकारीयो निमंत्रण कार्ड देते हुये,झारखण्ड मानव कल्याण सोसाईटी के अध्यक्ष रामा शीष चौहान,उपाध्यक्ष,राजेश गोस्वामी,महीला सेल के पिंकी देवी,रिना कुमारी,रिंकी देवी सयुक्त रूप से उपस्थीत थे। सम्मान समारोह मे उपस्थीत, धनबाद नगर निगम के सभी वार्ड पार्षद, सभी CRP महिला कर्मचारी,सभी समाज सेवी गण लोगो को फुल और वस्त्र देकर सम्मानीत किया जायेगा। उप मेयर से मिलने के लिये झरिया मे एक कार्यलय खोलने का बिचार बिमर्श किया जायेगा जनता को सुबिधाओ को ध्यान मे रख कर।

मुफ्त शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय—हक़ या केवल सपना?

— डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत का लोकतंत्र विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में अपनी पहचान रखता है। यह केवल एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि करोड़ों नागरिकों की आकांक्षाओं, अधिकारों और सपनों का प्रतिबिंब है। संविधान ने हमें समानता, स्वतंत्रता और न्याय का वादा किया है, लेकिन यह सवाल आज भी हमारे सामने खड़ा है कि क्या यह वादा वास्तव में हर नागरिक तक समान रूप से पहुँच पाया है? क्या आज भी एक गरीब और एक अमीर व्यक्ति के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय की सुविधाएँ बराबर हैं? यदि नहीं, तो यह स्वीकार करना होगा कि हमारा लोकतंत्र अभी भी अधूरा है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में हाल के वर्षों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला है। दवाइयों को ब्रांड के बजाय "साल्ट" के आधार पर उपलब्ध कराने की पहल ने यह साबित किया है कि सही नीति और नीयत के साथ आम जनता को बड़ी राहत दी जा सकती है। सस्ती दवाइयाँ केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि जीवन की रक्षा का माध्यम बनती हैं। यह एक उदाहरण है कि जब सरकार समानता को केंद्र में रखकर काम करती है, तो बदलाव संभव है। यही सोच यदि शिक्षा और न्याय जैसे क्षेत्रों में भी लागू की जाए, तो देश की तस्वीर बदल सकती है।

शिक्षा आज के समय में केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक उन्नति का सबसे बड़ा साधन है। लेकिन दुर्भाग्य से भारत में शिक्षा की व्यवस्था दो भागों में बंटी हुई है—एक ओर महंगे निजी स्कूल और संस्थान हैं, जहाँ विश्वस्तरीय सुविधाएँ और संसाधन उपलब्ध हैं, और दूसरी ओर सरकारी स्कूल हैं, जहाँ कई जगह बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव है। यह विभाजन केवल संस्थानों का नहीं, बल्कि अवसरों का विभाजन है।एक अमीर परिवार का बच्चा जिस स्तर की शिक्षा प्राप्त करता है, वह एक गरीब परिवार के बच्चे के लिए अक्सर एक सपना बनकर रह जाता है।

ऐसी स्थिति में यह विचार स्वाभाविक रूप से सामने आता है कि क्यों न पूरे देश में एक समान शिक्षा प्रणाली लागू की जाए। एक ऐसा ढांचा, जहाँ हर कक्षा के लिए एक जैसी किताबें हों, एक जैसा पाठ्यक्रम हो और हर बच्चे को समान अवसर मिले। इससे शिक्षा के स्तर में संतुलन आ सकता है और प्रतियोगी परीक्षाओं में भी एक समान आधार तैयार हो सकता है। यह व्यवस्था न केवल सामाजिक समानता को बढ़ावा देगी, बल्कि देश की प्रतिभाओं को भी एक समान मंच प्रदान करेगी।

हालाँकि, यह भी समझना आवश्यक है कि भारत की विविधता इतनी व्यापक है कि पूरी तरह एकरूप शिक्षा प्रणाली लागू करना सरल नहीं है। अलग-अलग राज्यों की भाषाएँ, संस्कृतियाँ और स्थानीय आवश्यकताएँ हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसलिए एक "कॉमन कोर" के साथ-साथ क्षेत्रीय लचीलापन भी जरूरी है, ताकि समानता और विविधता के बीच संतुलन बना रहे।

स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति भी कुछ अलग नहीं है। निजी अस्पतालों की ऊँची फीस आम आदमी के लिए एक बड़ी बाधा है, जबकि सरकारी अस्पतालों में भीड़, संसाधनों की कमी और लंबी प्रतीक्षा जैसी समस्याएँ हैं। कई बार एक साधारण बीमारी भी आर्थिक संकट का कारण बन जाती है। ऐसे में यह विचार सामने आता है कि यदि सभी अस्पतालों का राष्ट्रीयकरण कर उन्हें एक समान व्यवस्था के अंतर्गत लाया जाए, तो हर व्यक्ति को समान और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ मिल सकती हैं। डॉक्टरों और कर्मचारियों को सरकार द्वारा वेतन दिए जाने से सेवा का भाव बढ़ सकता है और मुनाफाखोरी पर अंकुश लग सकता है।

न्याय व्यवस्था भी लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, लेकिन आम नागरिक के लिए न्याय तक पहुँचना आज भी एक कठिन प्रक्रिया है। न्यायालयों में लंबित मामलों की संख्या, कानूनी प्रक्रियाओं की जटिलता और वकीलों की ऊँची फीस—ये सभी मिलकर न्याय को महंगा और दूर बना देते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए न्याय प्राप्त करना कई बार असंभव जैसा हो जाता है। यदि न्याय व्यवस्था को सरल, सुलभ और निशुल्क बनाया जाए, तो यह लोकतंत्र के वास्तविक अर्थ को साकार करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

इन सभी क्षेत्रों—शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय—का पूर्ण राष्ट्रीयकरण एक आदर्श समाधान प्रतीत होता है। एक ऐसी व्यवस्था, जहाँ सरकार सभी संस्थानों को अपने नियंत्रण में लेकर सभी कर्मचारियों को वेतन दे और सेवाओं को निशुल्क एवं समान रूप से उपलब्ध कराए। यह विचार सुनने में आकर्षक है और एक न्यायपूर्ण समाज की कल्पना को मजबूत करता है। लेकिन इसके साथ कई व्यावहारिक चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं।

सबसे बड़ी चुनौती है आर्थिक संसाधनों की। पूरे देश में शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय को पूरी तरह निशुल्क और उच्च गुणवत्ता के साथ उपलब्ध कराना एक बहुत बड़ा वित्तीय दायित्व है। इसके लिए सरकार को अपने बजट में बड़े स्तर पर बदलाव करने होंगे, कर व्यवस्था को मजबूत करना होगा और संसाधनों का कुशल प्रबंधन करना होगा।

दूसरी चुनौती है गुणवत्ता और जवाबदेही की। पूरी व्यवस्था सरकारी होने पर कई बार कार्यकुशलता में कमी आ जाती है। निजी क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा कई बार सेवाओं की गुणवत्ता को बेहतर बनाए रखने में मदद करती है। यदि पूरी व्यवस्था केवल सरकार के हाथ में होगी, तो नवाचार और सुधार की गति धीमी पड़ सकती है।

इसके अलावा, प्रशासनिक स्तर पर भी इतनी बड़ी व्यवस्था को संचालित करना आसान नहीं है। भ्रष्टाचार, लापरवाही और संसाधनों के दुरुपयोग जैसी समस्याएँ भी सामने आ सकती हैं। इसलिए यह जरूरी है कि किसी भी नीति को लागू करते समय इन संभावित चुनौतियों का समाधान पहले से ही तैयार किया जाए।

इस परिप्रेक्ष्य में एक संतुलित दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक और प्रभावी हो सकता है। सरकार को चाहिए कि वह शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय के क्षेत्र में मजबूत सार्वजनिक ढांचा तैयार करे, जहाँ हर नागरिक को न्यूनतम स्तर की उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएँ सुनिश्चित हों। इसके साथ ही, निजी क्षेत्र को पूरी तरह समाप्त करने के बजाय उसे सख्त नियमों, पारदर्शिता और जवाबदेही के दायरे में रखा जाए।

शिक्षा में एक समान "कॉमन कोर करिकुलम" लागू किया जा सकता है, जिससे पूरे देश में बुनियादी स्तर पर समानता सुनिश्चित हो, जबकि क्षेत्रीय विषयों और भाषाओं के लिए लचीलापन रखा जाए। स्वास्थ्य सेवाओं में "यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज" की दिशा में काम किया जा सकता है, जिससे हर नागरिक को बुनियादी इलाज मुफ्त या अत्यंत सस्ती दरों पर उपलब्ध हो। न्याय व्यवस्था में डिजिटल तकनीक और सरल प्रक्रियाओं के माध्यम से पारदर्शिता और गति लाई जा सकती है।

अंततः, लोकतंत्र की सफलता केवल चुनावों में नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में निहित होती है। जब तक एक गरीब व्यक्ति अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा नहीं दिला सकता, जब तक वह बीमारी के समय उचित इलाज नहीं पा सकता, और जब तक उसे समय पर न्याय नहीं मिल सकता—तब तक लोकतंत्र का सपना अधूरा ही रहेगा।

यह समय केवल विचार करने का नहीं, बल्कि ठोस कदम उठाने का है। समान शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य और निष्पक्ष न्याय केवल आदर्श नहीं, बल्कि एक सशक्त और समावेशी लोकतंत्र की आधारशिला हैं। यदि हम इन क्षेत्रों में वास्तविक समानता स्थापित कर पाते हैं, तो न केवल लोकतंत्र पूर्ण होगा, बल्कि देश की सामाजिक और आर्थिक संरचना भी मजबूत होगी।

अब प्रश्न यह नहीं है कि यह लक्ष्य कठिन है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या हम इसे प्राप्त करने के लिए सामूहिक इच्छाशक्ति दिखाने को तैयार हैं। यदि उत्तर 'हाँ' है, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत का लोकतंत्र केवल कागजों पर नहीं, बल्कि हर नागरिक के जीवन में समान रूप से दिखाई देगा।

लूट का नया तरीका टेस्ट ड्राइव, 1.5 करोड़ रुपये की महंगी कार लुटेरों के निशाने पर

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : टेस्ट ड्राइव के बहाने बिहारी लुटेरों का आतंक। भरतपुर इलाके से महंगी कार लूटने का आरोप। वे 10 या 20 लाख नहीं, बल्कि 1.5 करोड़ की महंगी कार (डिफेंडर) लूट ले गए हैं। उन्होंने शोरूम के सेल्समैन और मैनेजर को बंदूक की नोक पर धमकाकर 1.5 लाख रुपये भी लूट लिए। उनकी मुसीबत यहीं खत्म नहीं हुई। वे एक महिला सेल्समैन के साथ बदसलूकी करने से नहीं रुके। लुटेरों ने यह वारदात भरतपुर स्टूडियो चौक-चंदाका रोड पर एक होटल में की है।

शिकायत के आधार पर भरतपुर थाना पुलिस और स्पेशल स्क्वॉड मिलकर लुटेरों को पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस को पता चला है कि लूट और हमले के मामले में 5 लोग शामिल हैं। होटल और उसके आसपास के CCTV फुटेज से लुटेरों की पहचान हो गई है। इनमें से चार बिहार के कुख्यात अपराधी हैं। एक और ओडिया है। इस महंगी एसयूवी कार का शोरूम फुलखरा ग्रैंड बाजार के सामने है। मंगलवार को शोरूम में फोन से डेढ़ करोड़ रुपये की डिफेंडर कार का ऑर्डर मिला था। बुधवार दोपहर एक महिला सेल्समैन सेल्समैन संतोष नायक और ड्राइवर के साथ डेमो डिफेंडर लेकर स्टूडियो चौक पहुंची। संतोष के मुताबिक, स्टूडियो चौक पर पहले से ही एक काली महंगी कार में चार बदमाश उनका इंतजार कर रहे थे। वे उन्हें होटल तक ले गए।

संतोष पहली मंजिल पर कमरे में गया। वहां लुटेरों ने उसे फल खिलाया। कुछ देर बाद लुटेरों का असली चेहरा सामने आ गया। उन्होंने संतोष के सिर पर चादर डाल दी और चेहरे पर बेरहमी से वार किए। उसके पर्स से छह हजार रुपये नकद लूट लिए। उन्होंने संतोष को बंदूक की नोक पर धमकाया और शोरूम के जीएम गौतम सिन्हा को बुलाकर दो डिफेंडर खरीदने का लालच दिया। स्टूडियो चौक से तीन लुटेरे संतोष के साथ वहां गए और गौतम को होटल तक ले गए। लुटेरों ने होटल के कमरे में गौतम को बंदूक की नोक पर धमकाया। उन्होंने उससे PhonePe के ज़रिए 1 लाख रुपये और ऑनलाइन बैंकिंग के ज़रिए 50,000 रुपये ले लिए। कुछ देर बाद लुटेरों ने महिला सेल्समैन को कमरे में बुलाया। उसे धमकाया। 3 घंटे तक डराने-धमकाने के बाद लुटेरों ने गौतम, संतोष, ड्राइवर और महिला सेल्समैन को दो कमरों में बंधक बना लिया और डिफेंडर कार में चंदका रोड ले गए। आधे घंटे बाद होटल अधिकारियों की मदद से सभी कमरे से निकल गए। लुटेरे पहले लाई गई महंगी कार होटल में ही छोड़कर भाग गए थे। पुलिस को पता चला है कि उन्होंने बरमूडा की एक ट्रैवल एजेंसी से कार किराए पर ली थी। लूट में होटल अधिकारियों की भूमिका शक के घेरे में है। लूट और हमला 3 घंटे तक होता रहा, लेकिन होटल अधिकारियों को इसकी जानकारी कैसे नहीं हुई? पुलिस इसका पता लगाने की कोशिश कर रही है।

कोरेमुला स्थित सीरवी समाज मंदिर (बडेर) के तत्वावधान में आयोजित चैत्र नवरात्रि महोत्सव के तहत गुरुवार को हवन का आयोजन किया गया। शुभ मुहूर्त में पूजा-अर्चना कर श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ हवन में पूर्णाहुति दी। इस अवसर पर उपस्थित अध्यक्ष कालूराम काग, सचिव डायाराम लचेटा, पुजारी पोकरराम काग, नगाराम काग, कंचन देवी काग, सुनिता काग, पापुड़ी देवी लचेटा व पंडित बाबूलाल शर्मा, संपत शर्मा आदि उपस्थित रहे।

बड़ाजामदा में मालगाड़ी के तीन डिब्बे बेपटरी, 33 हजार का बिजली खम्भा ध्वस्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, चक्रधरपुर रेल मंडल के बड़ाजामदा रेलवे फाटक के समीप गुरुवार शाम भीषण रेल हादसा होते-होते बचा। बड़बिल से लौह अयस्क (Iron Ore) लादकर जा रही एक मालगाड़ी के तीन डिब्बे अचानक पटरी से उतर गए।

घटना शाम करीब सात बजे की है, जिसने पूरे इलाके में अफरा-तफरी मचा दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मालगाड़ी की रफ्तार काफी तेज थी।

बेपटरी होने के दौरान झटका इतना जोरदार था कि रेलवे लाइन के किनारे स्थित 33 हजार वोल्ट का बिजली का खंभा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। रेलवे के प्रारंभिक आकलन के अनुसार, पटरी के उचित रखरखाव (मेंबटेनेंस) न होना इस हादसे का मुख्य कारण हो सकता है।

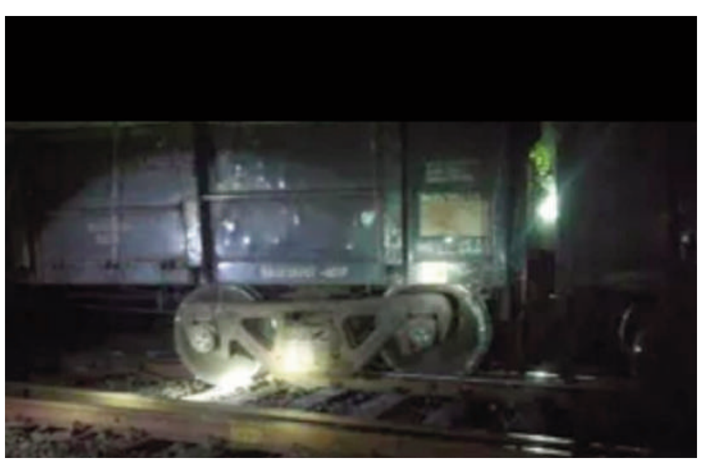

हादसे के वक्त रेलवे फाटक के पास टंकी साई की महिलाएं पानी भरने के लिए आ-जा रही थीं। अचानक तेज आवाज और चिंगारियां देखकर वहां भगदड़ मच गई। जिससे रेलवे सुरक्षा का पोल खोलकर रख दिया।

हालांकि, मौके पर तैनात रेलवे फाटक के चौकीदार ने तत्परता दिखाते हुए तुरंत गेट बंद कर दिए और सिग्नल को लेकर सावधानी बरती, जिससे एक बड़ी जनहानि टल गई।

घटना की सूचना मिलते ही बड़ाजामदा के रेल अधिकारी हरकत में आए। डांगोवासपोसी के एआरएम जीरेंद्र माझी और एडीआरएम विनय कुजूर को मामले की जानकारी दी गई।हादसे के कारण रेलवे फाटक पर सड़क मार्ग पूरी तरह ठप हो गया। करीब डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद बीच रास्ते में फंसे डिब्बों को खिसकाकर सड़क परिचालन आंशिक रूप से बहाल किया गया चक्रधरपुर और डांगोवासपोसी से मैकेनिकल टीम को मौके पर बुलाया गया है। देर रात तक डिब्बों को पटरी पर चढ़ाने और बिजली लाइनों की मरम्मत का कार्य जारी रहा।

रांची में रेल वाणिज्यिक निरीक्षण हिमांशु को पचास हजार घुस लेते सीबीआई ने किया गिरफ्तार

झारखंड के अनेक सरकारी उपक्रम में मचा हड़कंप, सीबीआई ने जनता को हेल्प नंबर जारी की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, केंद्र हो या राज्य सरकार के कार्यालय झारखंड में भ्रष्टाचार विकराल रूप ले चुका है .इस क्रम में आज केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने रिश्वतखोरी के एक मामले में कार्रवाई करते हुए दक्षिण पूर्वी रेलवे के मुख्य वाणिज्यिक निरीक्षक (Chief Commercial Inspector - CCI) को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है. आरोपी अधिकारी पर शिकायतकर्ता से पचास हजार रुपये की रिश्वत मांगने और उसे स्वीकार करने का आरोप है.

सीबीआई की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 25 मार्च 2026 को इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की गई. आरोप है कि मुख्य वाणिज्यिक निरीक्षक ने एक शिकायतकर्ता के लगभग 8.70 लाख रुपये के लंबित बिलों के भुगतान के एवज में 10 प्रतिशत कमीशन की मांग की थी. शिकायतकर्ता ने इस मामले की जानकारी सीबीआई को दी, जिसके बाद एजेंसी ने पूरे मामले की जांच शुरू की. बता दें इस कांड के शिकायत कर्ता अजय त्यागी है जबी सी बी आई में आर सी -5ए, 2026आर में इस बाबत एक प्राथमिकी दर्ज हुई है.

प्रारंभिक जांच के बाद सीबीआई ने जाल बिछाया और आरोपी अधिकारी को रिश्वत लेते हुए पकड़ने की योजना बनाई. तय योजना के तहत आरोपी ने शिकायतकर्ता से पचास हजार रुपये की पहली किस्त के रूप में रिश्वत मांगी. जैसे ही आरोपी ने यह राशि ली, सीबीआई की टीम ने उसे मौके पर ही रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया.

गिरफ्तारी के बाद सीबीआई की टीम आरोपी के कार्यालय और आवासीय परिसरों में तलाशी अभियान चला रही है. तलाशी के दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेज और अन्य साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं, जिससे इस पूरे नेटवर्क और संभावित अन्य संलिप्त लोगों की भूमिका का पता लगाया जा सके.

वैसे हिमाशु शेखर का चयन कमर्शियल प्रबंधक के रूप में हो चुका है . सीबीआई की टीम हिमांशु शेखर के कार्य से जुड़े तमाम फाईलों, कम्प्यूटरों की जांच कर रही है जिसमें एमरजैंसी कोटे से आरक्षण का आवंटन भी शामिल है .सीनियर डी सी एम्की निगरानी में हिमांशु भी यह काम में नियोजित था .यहां कोटा का रसुकदारों के साथ संपर्क से भी सीबीआई जांच कर सकती है, जिसका व्यवसायिक लाभ पर सीधा संबंध रहता है .सच पुछा जाए तो मामले की मामले की गहराई तक जांच होना लाजमी है .

इस छापे कार्रवाई के बाद रेलवे विभाग में हड़कंप मच गया है साथ ही अनेक सरकारी उपक्रम में भी . माना जा रहा है कि जांच के दौरान और भी कई अहम खुलासे हो सकते हैं. सीबीआई फिलहाल पूरे मामले की गहन जांच कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि इस भ्रष्टाचार के मामले में और कौन-कौन शामिल हैं.

सीबीआई ने स्पष्ट किया है कि मामले की जांच जारी है और आगे की कार्रवाई साक्ष्यों के आधार पर की जाएगी.उधर सीबीआई ने अपना रांची का नंबर भी दिया है, अपनी भ्रष्टाचार निरोधक शाखा का फोन नंबर 0651-2360093तथा मोबाईल नंबर 9470590422 देते हुए कहा है कि हर शिकायत कर्ता इसमें संपर्क स्थापित कर सकते हैं.

डिजिटल अकेलापन और एआई आधारित संवाद हज़ारों 'फ्रेंड्स' के बावजूद इंसान अकेला — एआई-मित्रता की दुनिया में मानवीय संबंध का भविष्य

डॉ. शैलेश शुक्ला

इक्कीसवीं सदी के इस तीव्रगामी, तकनीक- चालित युग में मनुष्य ने संवाद के ऐसे साधन विकसित कर लिए हैं, जिनकी कल्पना भी पूर्ववर्ती पीढ़ियाँ नहीं कर सकती थीं। एक क्लिक में महाद्वीपों की दूरी सिमट जाती है, एक संदेश में सैकड़ों लोगों तक विचार पहुँच जाता है, और एक प्रोफ़ाइल में व्यक्ति की पूरी सामाजिक उपस्थिति दर्ज हो जाती है। फिर भी, इस समूचे संचार-सामर्थ्य के बीच एक गहरी विडंबना जन्म ले चुकी है—मनुष्य जितना अधिक 'जुड़ा' है, उतना ही अधिक 'अकेला' भी। यह विरोधाभास केवल भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि एक गंभीर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संकट के रूप में उभर रहा है, जिसे आज "डिजिटल अकेलापन" कहा जा रहा है।

यह अकेलापन केवल उन लोगों तक सीमित नहीं है, जिनके पास मित्र या परिवार नहीं हैं, बल्कि यह उन लोगों में भी दिखाई देता है, जिनके पास हजारों आभासी संबंध हैं। सामाजिक माध्यमों पर सक्रियता, निरंतर ऑनलाइन उपस्थिति और सतत संचार के बावजूद व्यक्ति अपने भीतर एक रिक्तता, एक अनकही पीड़ा और एक अव्यक्त अलगाव का अनुभव करता है। इसी रिक्तता को भरने के लिए एआई आधारित संवाद प्लेटफ़ॉर्म सामने आए हैं, जिन्होंने मनुष्य को एक ऐसा 'सुनने वाला साथी' प्रदान किया है, जो हर समय उपलब्ध है, जो कभी थकता नहीं, और जो बिना किसी निर्णय के केवल सुनता और उत्तर देता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2023 में अकेलेपन को वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य की प्राथमिकता घोषित किया, जो इस समस्या की व्यापकता और गंभीरता को दर्शाता है।

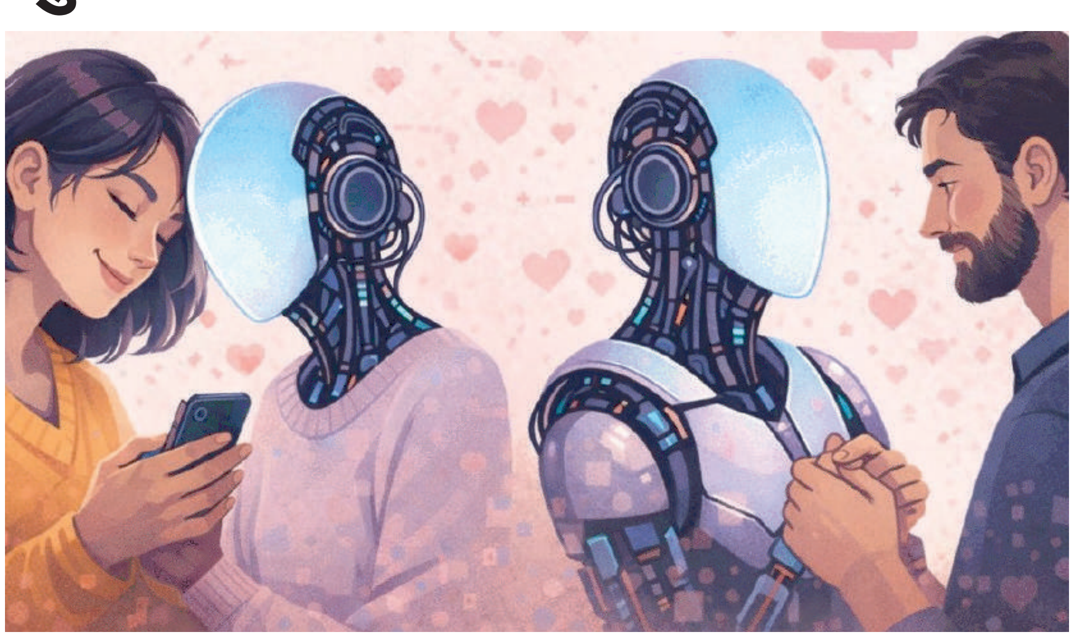

इसी क्रम में अमेरिका के सर्जन जनरल द्वारा अकेलेपन को "महामारी" की संज्ञा दी गई और यह बताया गया कि इसका प्रभाव स्वास्थ्य पर उतना ही घातक हो सकता है जितना धूम्रपान का। सिग्ना की 2024 की वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 58 प्रतिशत वयस्क किसी न किसी स्तर पर अकेलेपन का अनुभव करते हैं। यह आँकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की संरचना में आई उस दरार का संकेत है, जो धीरे-धीरे गहरी होती जा रही है।

सबसे अधिक चिंता का विषय यह है कि यह संकट युवाओं में अधिक गहरा है। 18 से 24 वर्ष की आयु वर्ग, जो तकनीकी रूप से सबसे अधिक सक्रिय है, वही सबसे अधिक अकेलापन महसूस करता है। यह वह पीढ़ी है, जो 'लाइक्स' और 'फॉलोअर्स' के माध्यम से अपने अस्तित्व को मापती है, लेकिन वास्तविक संबंधों की गहराई से वंचित रह जाती है। यह स्थिति इस बात का प्रमाण है कि डिजिटल जुड़ाव और भावनात्मक जुड़ाव एक ही बात नहीं हैं।

भारत में यह समस्या धीरे-धीरे उभर रही है। पारंपरिक रूप से भारतीय समाज परिवार और समुदाय पर आधारित रहा है, जहाँ संयुक्त परिवार, पड़ोस और सामाजिक संबंध व्यक्ति को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करते थे। लेकिन तीव्र शहरीकरण, रोजगार के लिए प्रवास और एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने इस सामाजिक संरचना को कमजोर किया है। स्वास्थ्य मंत्रालय की 2024 की मानसिक स्वास्थ्य रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 150 मिलियन लोगों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता की आवश्यकता है, लेकिन केवल लगभग 20 प्रतिशत लोगों तक ही यह सहायता पहुँच पाती है।

विशेष रूप से महानगरों में रहने वाले युवा पेशेवर, जो अपने परिवारों से दूर रहते हैं, इस संकट के सबसे बड़े शिकार बन रहे हैं। बंगलुरु स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के एक अध्ययन में पाया गया कि आईटी क्षेत्र में कार्यरत लगभग 40 प्रतिशत कर्मचारियों में सामाजिक अलगाव के लक्षण दिखाई देते हैं। यह वही वर्ग है, जो तकनीक के सबसे अधिक संपर्क में है और इसलिए एआई आधारित संवाद प्लेटफ़ॉर्म का सबसे अधिक उपयोग करता है।

एआई आधारित संवाद प्लेटफ़ॉर्म, जैसे कि वर्चुअल चैटबॉट और डिजिटल सहायक, इस अकेलेपन को कम करने के एक साधन के रूप में उभरे।

नीति, नैतिकता और शक्ति का यथार्थ: सुंदरकांड की दृष्टि से वैश्विक राजनीति का विश्लेषण

अजय कुमार बियानी
इंजीनियर

"सठ सन विनय, कुटिल सन प्रीति।

सहज कृपन सन सुंदर नीति॥"

यह पंक्ति केवल काव्य सौंदर्य नहीं, बल्कि मानव स्वभाव, शासन-व्यवहार और शक्ति-संतुलन का गहन और शाश्वत सिद्धांत है। गोस्वामी तुलसीदास ने सदियों पूर्व जिस यथार्थ को शब्द दिए, वही आज वैश्विक राजनीति के केंद्र में जीवंत रूप में दिखाई देता है।

वर्तमान विश्व व्यवस्था में आदर्शों की चर्चा अवश्य होती है, परंतु निर्णयों की दिशा प्रायः हितों से निर्धारित होती है। शांति, सहयोग और संवाद के स्वर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गूंजते हैं, किंतु वास्तविकता में शक्ति, संदेह और रणनीति ही नीति का निर्धारण करते हैं। यही द्वंद्व आज पश्चिम एशिया की जटिल परिस्थितियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

ईरान और इजराइल के मध्य संबंध केवल भौगोलिक या सीमाई विवाद तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह वैचारिक टकराव और अस्तित्वगत असुरक्षा का प्रतीक हैं। एक पक्ष दूसरे की वैधता को स्वीकार नहीं करता, तो दूसरा पक्ष उसके सामरिक प्रयासों को अपने अस्तित्व के लिए चुनौती मानता है। ऐसी परिस्थिति में विश्वास का स्थान संदेह ले लेता है और संवाद औपचारिकता बनकर रह जाता है। तुलसीदास की पंक्ति "कुटिल सन प्रीति" यहाँ सजीव हो उठती है—जहाँ स्वभाव में जटिलता और अविश्वास हो, वहाँ मित्रता स्थायी नहीं हो सकती।

दूसरी ओर, वैश्विक शक्ति के रूप में अमेरिका की भूमिका भी इसी सिद्धांत का एक व्यावहारिक उदाहरण

प्रस्तुत करती है। जब कूटनीतिक प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं देते, तब नीति में कठोरता का समावेश होता है। अंतरराष्ट्रीय समझौतों से अलग होना, आर्थिक प्रतिबंधों का प्रयोग करना—ये सभी उस यथार्थ को दर्शाते हैं कि जहाँ विनम्रता प्रभावी न हो, वहाँ दबाव ही नीति का माध्यम बनता है। यह "सठ सन विनय" का आधुनिक रूप है, जहाँ नीति परिस्थितियों के अनुरूप अपना स्वरूप बदलती है।

इस समूचे परिदृश्य से यह स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में स्थायी मित्रता या शत्रुता का कोई स्थान नहीं होता, केवल हित स्थायी होते हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपने अस्तित्व, सुरक्षा और विकास को सर्वोपरि मानकर निर्णय लेता है। यही कारण है कि विश्वास सीमित और संदेह व्यापक बना रहता है।

शक्ति का प्रश्न भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। वैश्विक राजनीति में वही राष्ट्र प्रभावी होता है, जिसके पास सैन्य, आर्थिक और रणनीतिक क्षमता होती है। कमजोर राष्ट्रों की शांति की अपील अक्सर अनसुनी रह जाती है, जबकि सशक्त राष्ट्र अपनी शर्तों पर संवाद स्थापित करते हैं। यह यथार्थ कठोर अवश्य है, परंतु इसे नकारा नहीं जा सकता।

कूटनीति की सफलता केवल कोमलता या कठोरता में नहीं, बल्कि दोनों के संतुलित प्रयोग में निहित है। संवाद और दबाव, सहयोग और प्रतिस्पर्धा—इन सबका समुचित समन्वय ही प्रभावी नीति का निर्माण करता है। यही संतुलन किसी भी राष्ट्र को दीर्घकालिक सफलता की ओर अग्रसर करता है।

अंततः, सुंदरकांड की यह चौपाई आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने समय में थी। यह हमें यह सिखाती है कि नीति को आदर्शों के साथ-साथ यथार्थ की कसौटी पर भी परखना आवश्यक है। प्रत्येक परिस्थिति में एक ही दृष्टिकोण लागू नहीं किया जा सकता; समय, स्थान और स्वभाव के अनुसार रणनीति का निर्धारण ही बुद्धिमत्ता का परिचायक है।

आज के वैश्विक संदर्भ में यह स्पष्ट है कि केवल आदर्शों के सहारे नीति नहीं चलती, और केवल शक्ति के सहारे स्थायी शांति नहीं मिलती। दोनों के बीच संतुलन ही वह मार्ग है, जो स्थिरता और सफलता की ओर ले जाता है।

इस प्रकार, तुलसीदास की यह पंक्ति केवल साहित्यिक धरोहर नहीं, बल्कि आधुनिक विश्व के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है—जहाँ नीति का आधार परिस्थितियों की समझ और शक्ति का विवेकपूर्ण उपयोग होना चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023